दरिया साहब

मारवाड़ के प्रसिद्ध महात्मा की

बानी और जीवन-चरित्र

यह पुस्तक अधिक साखियों और पदों और नोटों के साथ जीवन-चरित्र सहित विशेष शुद्धता से तीसरी बार छापी जाती है।

इलाहाबाद

बेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुआ।

सन् १९२२ ई०

तीसरी बार १०००]

[दाम ।=)

Printed at The Belvedere Print...

संतबानी

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के वृत्तांत और कौतुक संक्षेप से फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् "संतबानी संग्रह" भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीं जिन का नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था— "न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हम को कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तक छपी हैं जिन में प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई है—उनके नाम और दाम इस पुस्तक के अन्त वाले पृष्ठों में देखिये।

मनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,
इलाहाबाद।

सन् १९२२ ई०

सूचीपत्र शब्दों का

शब्द पृष्ठ

प

ब

म

र

स

ह

सूचीपत्र अंगों का

दरिया साहब (मारवाड़ वाले)

का

जीवन-चरित्र

दरिया साहब ने मारवाड़ के जैतारन नामक गाँव में भादों बदी अष्टमी संवत १७३३ (विक्रमी) के दिन एक मुसलमान कुल में जन्म लिया और अगहन सुदी पूनों संवत १८१५ को ८२ बरस से अधिक अवस्था में परलोक को सिधारे। उस समय महाराज बख़्तसिंह जी मारवाड़ के राजा थे। दरिया साहब के बाप मा जाति के धुनियाँ थे जैसा कि उन्हों ने एक पद में कहा है। (४६ वाँ पृष्ठ देखो)—

जो धुनियाँ तौ भी मैं राम तुम्हारा।
अधम कमीन जाति मतिहीना,
तुम तो हौ सिर ताज हमारा।

दरिया साहब की सात ही बरस की उमर में उनके पिता का देहान्त हुआ जिस से वह उसी देश के रैन नामक गाँव, परगाना मेड़ता में अपने नाना के घर जाकर रहे। उनके नाना का नाम कमीचें था।

कहते हैं कि महाराज बख़्तसिंहजी को एक असाध रोग था जिस का इलाज करते करते वह हार गये। आख़िर भाग से दरिया साहब के आश्रम पर रैन गाँव में जा कर बड़ी दीनता से बिनती की जिस पर दरिया साहब ने दया करके अपने गुरमुख चेले सुखरामदास जी के द्वारा उन को उपदेश दिया और आरोग हो गये। सुखरामदास जी जातिके सिकलीगर लोहार थे जिन का स्थान रैन में अब तक मौजूद है जहाँ हर बरस मेला होता है।

दरिया साहब के गुरु प्रेमजी थे जो बीकानेर के गाँव खियानसर में रहते थे।

मारवाड़ (राजपूताना) में दरिया साहब के मत के हज़ारों आदमी हैं। दरिया पंथियों के विश्वास के अनुसार नीचे लिखा हुआ दोहा महात्मा दादू साहब ने दरिया साहब के जन्म लेने से एक सौ बरस पहिले कहा था—

देह पड़ंताँ दादू कहै, सौ बरसाँ इक संत।
रैन नगर में परगटै, तारै जीव अनंत॥

यह दरिया साहब उन दरिया साहब से बिल्कुल निराले हैं जो बिहार प्रांत में डुमराँव के पास के धरकंधा नामक गाँव में इसी समय में बिराजमान थे और जिन का देहांत होना १०६ बरस की उमर में संवत १८३७ में पाया जाता है। इस हिसाब से मारवाड़ वाले दरिया साहब बिहार वाले दरिया साहब के दो बरस पीछे पैदा हुए और २२ बरस पहिले गुप्त हुए। इन दोनों महात्माओं की बानी और इष्ट के नाम में इतना भेद है कि दोनों कदापि एक नहीं ठहर सकते। पर यह अनूठी बात है कि दोनों महात्मा नीच जाति के मुसलमानी माता के पेट से जन्मे (क्योंकि मारवाड़ वाले महात्मा की मा धुनियाइन थीं और बिहार वाले की दरज़िन) दोनों महात्मा का नाम एक ही था, दोनों शब्द-मार्गी थे और एक ही समय में बयासी बरस तक रहे, यद्यपि जुदा २ देशों में एक दूसरे से बहुत दूर पर। बिहार के दरिया साहब के पंथ वाले दूसरे दरिया साहब के पंथ वालों से गिनती में अधिक हैं; उन की बानी भी जो ऊँचे घाट की और अति मनोहर है हमको मिली है जो उन के जीवन-चरित्र के साथ छपी है।

मारवाड़ वाले दरिया साहब की बानी और जीवन-चरित्र हम को लाला शंकरलाल साहब बी. ए. सिक्रिटरी सर्दार रिसाला जोधपुर की सहायता से मिले जिसके के लिये हम उन को धन्य-वाद देते हैं।

संत चरन की रज, अधम,
संतबानी पुस्तक-माला संपादक।

दरिया साहब

मारवाड़ के प्रसिद्ध महात्मा की

बानी

सतगुर का अंग।

नमो राम परब्रह्म जी, सतगुर संत अधारि।
जन दरिया वंदन करै, पल पल वारूं वारि ॥१॥
नमो नमो हरि गुरु नमो, नमो नमो सब संत।
जन दरिया बंदन करै, नमो नमो भगवंत ॥२॥
दरिया सतगुर भेंटिया, जा दिन जन्म सनाथ।
स्रवनाँ सब्द सुनाय के, मस्तक दीना हाथ ॥३॥
सतगुर दाता मुक्ति का, दरिया प्रेम दयाल।
किरपा कर चरनों लिया, मेटा सकल जँजाल ॥४॥
अंतर थो बहु जन्म को, सतगुर भाँग्यो* आय।
दरिया पति से रूठनो, अब कर प्रीति बनाय ॥५॥
जन दरिया हरि भक्ति की, गुराँ बताई बाट।
भूला ऊजड़ जाय था, नरक पड़न के घाट ॥६॥
दरिया सतगुर सब्द सौं, मिट गई खैंचा तान।
भरम अंधेरा मिट गया, परसा पद निरबान ॥७॥

---

*मिटा दिया।

दरिया सतगुर सब्द की, लागी चोट सुठौर।
चंचल सों निस्चल भया, मिट गइ मन की दौड़ ॥८॥
डूबत रहा भव सिंध में, लोभ मोह की धार।
दरिया गुरु तैरू मिला, कर दिया पैले पार* ॥९॥
दरिया गुरु गरुवा मिला, कर्म किया सब रद्द।
झूठा भर्म छुड़ाय कर, पकड़ाया सत सब्द ॥१०॥
दरिया सिरतक देख कर, सतगुर कीनी रीझ।
नाम सजीवन मोहिं दिया, तीन लोक को बीज ॥११॥
तीन लोक को बीज है, ररो ममो दोइ अंक।
दरिया तन मन अर्प के, पीछे होय निसंक ॥१२॥
जन दरिया गुरदेव जी, सब बिधि दई बताय।
जो चाहो निज धाम को, तो साँस उसाँसो ध्याय ॥१३॥
जन दरिया सतगुर मिला, कोई पुरबले पुन्न।
जड़ पलट चेतन किया, आन मिलाया सुन्न ॥१४॥
दरिया सतगुर सब्द सों, गत मत पलटै अंग।
कर्म काल मन का मिटा, हरि भज भये सुरंग ॥१५॥
नहिं था राम रहीम का, मैं मतहीन अजान।
दरिया सुध बुध ज्ञान दे, सतगुर किया सुजान ॥१६॥
सोता था बहु जन्म का, सतगुर दिया जगाय।
जन दरिया गुर सब्द सों, सब दुख गये बिलाय ॥१७॥

---

*पल्ले पार।

सतगुर सब्दाँ मिट गया, दरिया संसय सोग ।
औषद दे हरि नाम का, तन मन किया निरोग ॥१८॥
दरिया सतगुर कृपा करि, सब्द लगाया एक ।
लागतही चेतन भया, नेत्तर खुला अनेक ॥१९॥
दरिया गुरु पूरा मिला, नाम दिखाया नूर ।
निसा* भई सुख ऊपजा, किया निसाना दूर ॥२०॥
रंजी† सास्तर ज्ञान की, अंग रही लिपटाय ।
सतगुर एकहि सब्द से, दीन्हो तुरत उड़ाय ॥२१॥
सब्द गहा सुख ऊपजा, गया अंदेसा मोहि ।
सतगुर ने किरपा करी, खिड़की दीनी खोहि‡ ॥२२॥
जैसे सतगुर तुम करी, मुझ से कछू न होय ।
बिष भाँड़े बिष काढ़ कर, दिया अमीरस मोय ॥२३॥
गुरु आये घन गरज कर, अंतर कृपा उपाय ।
तपता से सीतल किया, सोता लिया जगाय ॥२४॥
गुरु आये घन गरज कर, सब्द किया परकास ।
बीज पड़ा था भूमि में, भई फूल फल आस ॥२५॥
गुरु आये घन गरज कर, करम कड़ो सब खेर§ ।
भरम बीज सब भूनिया, ऊग न सकके फेर ॥२६॥
साध सुधारे सिष्य को, दे दे अपना अंग ।
दरिया संगत कीट की, पलटि सो भया भिरंग ॥२७॥

---

*तसल्ली । †रज । ‡खोल । §मिटाकर ।

यह दरिया की बीनती, तुम सेती महराज ।
तुम भृंगी मैं कीट हूं, मेरी तुम को लाज ॥२८॥
बिक्ख छुड़ावैं चाह कर, अमृत देवैं हाथ ।
जन दरिया नित कीजिये, उन संतन को साथ ॥२९॥
उन संतन के साथ से, जिवड़ा पावै जक्ख* ।
दरिया ऐसे साध के, चित चरनों हो रक्ख ॥३०॥
बाड़ी में है नागरी†, पान देसांतर जाय ।
जो वहँ सूखै बेलड़ी, तो पान वहाँ बिनसाय ॥३१॥
पान बेल से बीछुड़े, परदेसाँ रस देत ।
जन दरिया हरिया रहै, उस हरी बेल के हेत ॥३२॥
कुंभी‡ परदेसों फिरै, अंड धरै घर माहिं ।
निस दिन राखै हेत में, ता सों बिनसै नाहिं ॥३३॥
अलल§ अंड को डाल दे, अंतर राखै हेत ।
पाक‖ फूट पर पक्क होवै,
(जब) खैंच आप दिस लेत ॥ ३४ ॥
अलल बसै आकास में, नीची सुरत निवास ।
ऐसे साधू जगत में, सुरत्त सिखर पिउ पास ॥३५॥
कोयल आले मूढ़¶ के, धरै आपना अंड ।
निस दिन राखै हेत में, तिन से पड़े न खंड ॥३६॥

---

*चैन । †नागर बेल । ‡एक चिड़िया का नाम (कुंज) । §एक चिड़िया का नाम (अलल पच्छ) । ‖पक कर । ¶कौवा ।

मूढ़ काग समझै नहीं, मोह माया सेवै ।
चून चुगावै कोयली, अपना कर लेवै ॥३७॥
चौमासे ऋतु जान कर, पिरथी को जल देत ।
कबहूं आवै ऋतु बिना, उस चात्रिक के हेत ॥३८॥
घनहर बरषै आय कर, देख पपीहा चाव ।
जिम दरिया सतगुर चवै[*], देख माँहिला[†] भाव ॥३९॥
महा प्रताप सिर पर तपै, किरपा रस पीऊँ ।
दरिया बच्चा कच्छ गुरु, जोये हो[‡] जीऊँ ॥४०॥
जन दरिया गुरदेवजी, ऐसे किया निहाल ।
जैसे सूखी बेलड़ी, बरस किया हरियाल ॥ ४१ ॥
सतगुर सा दाता नहीं, नहिं नाम सरीखा[§] देव ।
सिष सुमिरन साँचा करै, हो जाय अलख अभेव ॥४२॥
जन दरिया सतगुर करी, राम नाम की रीझ ।
अमृत बूठा[||] सब्द का, ऊगा पूरब बीज ॥४३॥
सतगुर बरषै सब्द जल, पर उपकार बिचारि ।
दरिया सूखी अवनि[¶] पर, रहै निवाना[**] वारि[††] ॥४४॥
सतगुर के इक रोम पर, वारूं बेर अनंत ।
अमृत ले मुख में दिये, राम नाम निज तंत ॥४५॥

---

* बरषा करते हैं। † अंतर का । ‡ ध्यान रखने से । § बराबर ।
|| बरसा । ¶ पृथवी । ** कुवा या बावड़ी । †† पानी ।

सतगुर बृच्छ समान हैं, फल से प्रीत न कोय ।
फल तरु से लागो रहै, रस पी परिपक होय ॥४६॥

सतगुर पारस की कनी, दीरग दीखैं नाहिं ॥
जन दरिया षट दरब धन, सब आया उन माहिं ॥४७॥

मीन तड़पती जल बिना, (तेहि) सागर माहिं समाय ।
जन दरिया ऐसी करी, गुरु किरपा मोहिं आय ॥४८॥

भवजल बहता जात था, संसय मोह की बाढ़ ।
दरिया मोहिं गुरु कृपा कर, पकड़ बाँह लिया काढ़ ४

सुमिरन का अंग ।

राम भजै गुर सब्द ले, तौ पलटै मन देह ।
दरिया छाना* क्यों रहै, भू पर बूठा† मेंह ॥ १ ॥

दरिया नाम है निरमला, पूरन ब्रह्म अगाध ।
कहे सुने सुख ना लहै, सुमिरे पावै स्वाद ॥२॥

दरिया सुमिरै राम को, करम भरम सब खोय ।
पूरा गुरु सिर पर तपै, बिघन न लागै कोय ॥३॥

दरिया सुमिरै राम को, कर्म भर्म सब चूर ।
निस तारा सहजै मिटै, जो उगै निर्मल सूर ॥४॥

---

* छप्पर । † बरसा

राम बिना फीका लगै, सब किरिया सास्तर ज्ञान।
दरिया दीपक कह करै, उदय भया निज भान ॥५॥

दरिया सूरज ऊगिया, नैन खुला भरपूर।
जिन अंधे देखा नहीं, उनसे साहब दूर ॥ ६ ॥

दरिया सूरज ऊगिया, चहुं दिस भया उजास।
नाम प्रकासै देह में, तौ सकल भरम का नास ॥७॥

आन धरम दीपक जिसा, भरमत होय बिनास।
दरिया दीपक क्या करै, आगे रबि परकास ॥ ८ ॥

दरिया सुमिरै राम को, दूजी आस निवार।
एक आस लागा रहै, तो कधी न आवै हार ॥ ९ ॥

दरिया नर तन पाय कर, कीया चाहै काज।
राव रंक दोनों तरैं, जो बैठे नाम जहाज ॥ १० ॥

नाम जहाज बैठै नहीं, आन करै सिर भार।
दरिया निश्चय बहैंगे, चौरासी की धार ॥ ११ ॥

जन्म अकारथ नाम बिन, भावै जान अजान।
जन्म मरन जम काल की, मिटै न खैंचा तान ॥१२॥

मुसलमान हिंदू कहा, षठ दरसन रंक राव।
जन दरिया निज नाम बिन, सब पर जम का दाव १३

सुर्ग मिर्त पाताल कह, कह तीन लोक बिस्तार।
जन दरिया निज नाम बिन, सभी काल को चार ॥१४॥

---

*चारा।

दरिया नर तन पाय कर, किया न राम उचार ।
बोझ उतारन आइया, सो लिये चले सिर भार ॥१५॥
जो कोइ साधू गृही में, माहिं राम भरपूर ।
दरिया कह उस दास की, मैं चरनन की धूर ॥१६॥
बाहर बाना भेष का, माहिं राम का राज ।
कह दरिया वे साधवा, हैं मेरे सिर का ताज ॥१७॥
राम सुमिर रामहिं मिला, सो मेरे सिर का मौर ।
दरिया भेष बिचारिये, खैर मैर को ठौर ॥१८॥
दरिया सुमिरै राम को, कोटि कर्म की हान ।
जम्म और काल का भय मिटै, ना काहू की कान ॥१९॥
दरिया सुमिरै राम को, आतम को आधार ।
काया काँची काँच सी, कंचन होत न बार ॥२०॥
दरिया राम सँभालते, काया कंचन सार ।
आन धर्म और भर्म सब, डाला सिर से भार ॥२१॥
दरिया सुमिरै राम को, सहज तिमिर का नास ।
घट भीतर होय चाँदना, परम जोति परकास ॥२२॥
सतगुर संग न संचरा, राम नाम उर नाहिं ।
ते घट मरघट सारिखा, भूत बसै ता माहिं ॥२३॥
राम नाम ध्याया नहीं, हूआ बहुत अकाज ।
दरिया काया नगर में, पंच भूत का राज ॥ २४ ॥
पंच भूत के राज में, सब जग लागा धुंध ।
जन दरिया सतगुर बिना, मिल रहा अंधा अंध ॥२५॥

सब जग अंधा राम बिन, सूझि न काज अकाज ।
राव रंक अंधा सबै, अंधों ही का राज ॥ २६ ॥
दरिया सब जग आँधारा, सूझै सो बेकाम ।
सूझा तबही जानिये, ता को दरसै राम ॥ २७ ॥
मन बच काया समेट कर, सुमिरै आतम राम ।
दरिया नेड़ा नीपजै*, जाय बसै निज धाम ॥२८॥
सकल ग्रंथ का अर्थ है, सकल बात की बात ।
दरिया सुमिरन राम का, कर लीजै दिन रात ॥२९॥
भू लोक भू राम कह, कहै पताला सेस ।
दरिया परघट नाम बिन, कहु कौन आयो देख ।३०।
लोह पलट कंचन भया, कर पारस को संग ।
दरिया परसै नाम को, सहजहिं पलटै अंग ॥ ३१ ॥
अपने अपने इष्ट में, राच रहा सब कोय ।
दरिया रत्ता राम सूं, साधसिरोमन सोय ॥ ३२ ॥
दरिया धन वे साधवा, रहैं राम लौ लाय ।
राम नाम बिन जीव सो, काल निरंतर खाय ॥३३॥
दरिया काया कारवी†, मौसर है दिन चार ।
जब लग साँस सरीर में, तब लग राम सँभार ॥३४॥
राम नाम रसना रटै, भीतर सुमिरै मन ।
दरिया ये गत साध की, पाया नाम रतन ॥ ३५ ॥

---

*पैदा हो । †झूठी ।

दरिया दूजे धर्म से, संसय मिटै न सूल ।
राम नाम रटता रहै, सर्व धर्म का मूल ॥३६॥
लख चौरासी भुगत कर, मानुष देह पाई ।
राम नाम ध्याया नहीं, तो चौरासी आई ॥३७॥
दरिया नाके नाम के, विरला आवे कोय ।
जो आवे तो परम पद, आवागवन न होय ॥३८॥
दरिया राम अगाध है, आतम का आधार ।
सुमिरत ही सुख ऊपजै, सहजहि मिटै विकार ॥३९॥
दरिया राम संभालता, देख किता गुन होय ।
आवागवन क दुख मिटै, ब्रह्म परायन सोय ॥४०॥
मरना है रहना नहीं, जा में फेर न सार ।
जन दरिया भय मानकर, आपन राम सँभार ॥४१॥
कहा कोई बन बन फिरै, कहा लियाँ कोइ फौज ।
जन दरिया निज नाम बिन, दिन दस मन की मौज ४२
दरिया आतम मल भरा, कैसे निर्मल होय ।
साबन लावे प्रेम का, राम नाम जल धोय ॥४३॥
दरिया इस संसार में, सुखी एक है संत ।
पिये सुधारस प्रेम से, राम नाम निज तंत ॥४४॥
राम नाम निस दिन रटै, दूजा नाहीं दाँय ।
दरिया ऐसे साध की, मैं बलिहारी जाँय ॥ ४५ ॥
दरिया सुमिरन राम का, देखत भूली खेल ।
धन धन हैं वे साधवा, जिन लीया मन मेल ॥ ४६ ॥

दरिया सुमिरन राम का, कीमत लखै न कोय ।
टुक इक घट में संचरै, पाव वस्तु मन होय ॥४७॥
दरिया सुमिरै राम को, साकित नाहिं सुहात ।
बीज चमक्कै गगन में, गधिया बावैं लात ॥४८॥
फिरी दुहाई सहर में, चोर गये सब भाज ।
सत्रू फिर मित्र ज भया, हुआ राम का राज ॥४९॥
जो कुछ थी सोही बनी, मिट गइ खैंचा तान ।
चोर पलट कर साह भै फिरी राम की आन ॥५०॥

बिरह का अंग

दरिया हर किरपा करी, बिरहा दिया पठाय ।
यह बिरहा मेरे साध को, सोता लिया जगाय ॥१॥
बिरह बियापी देह में, किया निरंतर बास ।
तालाबेली जीव में, सिसके साँस उसाँस ॥ २ ॥
कहा हाल तेरे दास का, निस दिन दुख में जाहि ।
पिव सेती परचो नहीं, बिरह सतावै माँहि ॥३॥
दरिया बिरही साध का, तन पीला मन सूख ।
रैन न आवै नींदड़ी, दिवस न लागै भूख ॥ ४ ॥
बिरहन पिउ के कारने, ढूँढ़न बन खँड जाय ।
निस बीती पिउ ना मिला, दरद रहा लिपटाय ॥५॥

'चलावे ।'

विरहन का घर विरह में, ता घट लोहु न मास ।
अपने साहब ---रने, सिसके साँसो साँस ॥६॥

सूर का अंग।

इष्टी स्वाँगी बहु मिले, हिरसी मिले अनंत ।
दरिया ऐसा ना मिला, राम रता कोइ संत ॥१॥
पंडित ज्ञानी बहु मिले, वेद ज्ञान परवीन ।
दरिया ऐसा ना मिला, राम नाम लवलीन ॥ २ ॥
बकता स्रोता बहु मिले, करते खैंचा तान ।
दरिया ऐसा ना मिला, जो सन्मुख झेले बान ॥३॥
दरिया बान गुरदेव का, बेधै भरम विकार ।
बाहर घाव दीखै नहीं, भीतर भया सिमार* ॥४॥
दरिया बान गुरदेव का, कोइ झेलै सूर सधीर ।
लागत ही व्यापै सही, रोम रोम में पीर ॥ ५ ॥
सोई घाव तन पर लगै, उट्ठ सँभालै साज ।
चोट सहारै सब्द की, सो सूरा सिरताज ॥६॥
चोट सहै उर सेल की, मुख ज्यों का त्यों नूर ।
चोट सहारै सब्द की, दरिया साँचा सूर ॥ ७ ॥
दरिया सूरा गुरमुखी, सहै सब्द का घाव ।
लागत ही सुध बीसरै, भूलै आन सुभाव ॥ ८ ॥

---

*मिसमार, चकनाचूर।

दरिया साँचा सूरमा, सहै सब्द की चोट ।
लागत ही भाजै भरम, निकस जाय सब खोट ॥९॥
दरिया सस्तर बाँध कर, बहुत कहावैं सूर ।
सूरा तब ही जानिये, अनी* मिले मुख नूर ॥१०॥
सबहि कटकां सूरा नहीं, कटक† माहिं कोइ सूर ।
दरिया पड़ै पतंग ज्यों, जब बाजै रन तूर ॥ ११ ॥
पड़ै पतंगा अगिन में, देह की नाहिं सँभाल ।
दरिया सिष सतगुर मिलै, तो हो जाय निहाल ॥१२॥
भया उजाला गैब का, दौड़े देख पतंग ।
दरिया आपा मेटकर, मिले अगिन के रंग ॥१३॥
दरिया प्रेमी आतमा, आवै सतगुर संग ।
सतगुर सेती सब्द ले, मिलै सब्द के रंग ॥ १४ ॥
दरिया प्रेमी आत्मा, राम नाम धन पाया ।
निरधन था धनवँत हुवा, भूला घर आया ॥ १५ ॥
सूरा खेत बुहारिया, सतगुर के बिस्वास ।
सिर ले सौंपा रामको, नहिं जीवन की आस ॥१६॥
दरिया खेत बुहारिया, चढ़ा दई की गोद ।
कायर काँपै खड़बड़ै, सूरा के मन मोद ॥ १७ ॥
सूर बीर साँची दसा, भीतर साँचा सूत ।
पूठ‡ फिरै नहिं मुख मुड़ै, राम तना रजपूत ॥१८॥

---

*नोक, घाव । †फौज । ‡पीठ ।

साध सूर का एक अँग, मना न भावै झूठ ।
साध न छाँड़ै राम को, रन में फिरै न पूठ ॥१९॥
सूर बीर की सभा में, कायर बैठे आय ।
सूरातन आवै नहीं, कोटि भाँति समुझाय ॥ २० ॥
सूर बीर की सभा में, जो कोइ बैठे सूर ।
सुनत बात सुख ऊपजै, चढ़ै सवाया नूर ॥ २१ ॥
आगे बढ़ै फिरै नहीं, यह सूरा की रीत ।
तन मन अरपै राम को, सदा रहै अघ जीत ॥२२॥
सूर न जानै कायरी, सूरातन से हेत ।
पुरज़ा पुरजा हो पड़ै, तहू न छाँड़ै खेत ।
सूर सदा है सनमुखी, मन में नाहीं संक ॥ २३ ॥
आपा अरपैं राम को, तो बाल न होवै बंक ॥२४।
सूर बीर साँची दसा, कबहु न मानै हार ।
अनी मिलै आगे धसै, सनमुख झेलै सार* ॥२५॥
सूरा के सिर साम† है, साधों के सिर राम ।
दूजी दिस ताकैं नहीं, पड़ै जो करड़ा काम ॥२६।
सूर चढ़ै संग्राम को, मन में संक न कोय ।
आपा अरपै राम को, होनी होय सो होय ॥ २७ ॥
सूरा खेत बुहारिया, भरम मनी कर चूर ।
आय बिराजा राम जी, दुर्जन भाजा दूर ॥२८॥

---

*लोहा। †हथियार का नाम।

पीछे पाँव धरै नहीं, सूरा बड़ा सुभाव ।
हूं करिया आगे धसै, कायर खेलै दाँव ॥ २९ ॥
साध सुरग चाहै नहीं, नरकाँ दिस नहिं जाय ।
पारब्रह्म के पार लग, पटा गैब का खाय ॥ ३० ॥
पटा पवड़िया* ना लहै, पटा लहै कोइ सूर ।
साखियाँ साहब ना मिलै, भजन किये भरपूर ॥३१।
दरिया सुमिरन राम का, सूराँ हंदा साज ।
आगे पीछे होय नहीं, वाहि धनी की लाज ॥३२॥
दरिया सो सूरा नहीं, जिन देह करी चकचूर ।
मन को जीत खड़ा रहै, मैं बलिहारी सूर ॥३३॥
सिंधु† बजा सूरा भिड़ा, बिरद‡ बखानै भाट ।
हला मेरु§ धूजी धरा, खुली सुरग की बाट ॥३४॥
बाट खुली जब जानिये, अंतर भया उजास ।
जो कुछ थी सो ही बनी, पूरी मन की आस ॥३५॥
दरिया साँचा सूरमा, अरि दल|| घालै चूर ।
राज थरपिया¶ राम का, नगर बसा भरपूर ॥३६॥
सूर बीर सनमुख सदा, एक राम का दास ।
जीवन मरन थित मेटकर, किया ब्रह्म में बास ॥३७॥
कायागढ़ ऊपर चढ़ा, परसा पद निर्वान ।
ब्रह्म राज निरभय भया, अनहद घुरा निसान ॥३८॥

---

*दरवान । † फ़ौजी बाजा । ‡तारीफ़ । §पहाड़ । ||दुश्मन की फ़ौज ।¶थापा।

नाद परचे का अंग

दरिया सुमिरै राम को, आठ पहर आराध ।
रसना में रस ऊपजे, मिसरी के से स्वाद ॥ १ ॥
रसना सेती ऊतरा, हिरदे कीया बास ।
दरिया बरषा प्रेम की, षट ऋतु बारह मास ॥२॥
दरिया हिरदे राम से, जो कभु लागे मन ।
लहरें उठें प्रेम की, ज्यों सावन बरषा घन ॥ ३ ॥
जन दरिया हिरदा बिचे, हुआ ज्ञान परकास ।
हौद भरा जहँ प्रेम का, तहँ लेत हिलोरा दास ॥४॥
हिरदै सेती ऊतरै, सुखम प्रेम की लहर ।
नाभि कँवल में संचरै, सहज भरीजै डहर* ॥५॥
नाभि कँवल के भीतरे, भँवर करत गुंजार ।
रूप न रेख न बरन है, ऐसा अगम बिचार ॥६॥
नाभी परचा ऊपजै, मिट जाय सभी बिबाद ।
किरनैं छूटैं प्रेम की, देखै अगम अगाध ॥ ७ ॥
नाभि कँवल से ऊतरा, मेरु डंड तल आय ।
खिड़की खोली नाद की, मिला ब्रह्म से जाय ॥८॥
दरिया चढ़िया गगन को, मेरु उलंघ्या डंड ।
सुख उपजा साँई मिला, भेंटा ब्रह्म अखंड ॥ ९ ॥
बंकनाल की सुध गहै, मेरु डंड की बाट ।
दरिया चढ़िया गगन को, लाँघ्याऔघट घाट ॥१०॥

रास्ता, तराई । लाँघ गया ।

दरिया मेरु उलंघ कर, पहुंचा त्रिकुटी संध।
दुख भाजा सुख ऊपजा, मिटा भर्म का धुंध ॥११॥
अनंतहि चंदा ऊगिया, सूर्य कोटि परकास।
बिन बादल बरषा घनी, छह ऋतु बारह मास ॥१२॥
बंक नाल की सुध गहै, कोइ पहुंचै बिरला संत।
अमी झिरै जोत झिलमिलै, नौबत घुरै अनंत ॥१३॥
दरिया मन परसन भया, बैठा त्रिकुटी छाजै।
अमी झिरै बिगसै कँवल, अनहद धुन गाजै ॥१४॥
दरिया त्रिकुटी संध में, मन ध्यान धरै कर धीर।
अवस चलत है सुषमना, चलत प्रेम की सीर ॥१५॥
चलै सुरसरी* अगम की, हिरदे मंझ समाय।
जन दरिया वा सुषमना, रोम रोम हो जाय ॥१६॥
दरिया नाद प्रकासिया, सो छबि कही न जाय।
धन्य धन्य वे साधवा, वहाँ रहे लौ लाय ॥१७॥
दरिया नाद प्रकासिया, पूरी मन की आस।
घन बरसै गाजै गगन, तेज पुंज परकास ॥१८॥
दरिया नाद प्रकासिया, [तहँ] किया निरंतर बास।
पारब्रह्म परसा सही, जहँ दरसन पावै दास ॥१९॥
जन दरिया जाय गगन में, परसा देव अनाद।
असुध बीसरी सुध भई, मिटिया बाद बिबाद ॥२०॥
घुरै नगारा गगन में, बाजै अनहद तूर।
जन दरिया जहँ थिति रची, निस दिन बरसै नूर ॥२१॥

---

*गंगा।

जन दरिया जाय गगन में, किया सुधा रस पान ।
गंग बहै जहँ अगम की, जाय किया असनान ।२२।
अमी झरत बिगसत कँवल, उपजत अनुभव ज्ञान ।
जन दरिया उस देस का, भिन भिन करत बखान ॥२३॥
सुरत गगन में बैठ कर, पति का ध्यान सँजोय ।
नाड़ि नाड़ि रूँ रूँ बिषे*, ररंकार धुन होय ॥२४॥
बिन पावक पावक जलै, बिन सूरज परकास ।
चाँद बिना जहँ चाँदना, जन दरिया का बास ॥२५॥
नौबत बाजै गगन में, बिन बादल घन गाज ।
महल बिराजैं परम गुरु, दरिया के महाराज ॥२६॥
कंचन का गिर देख कर, लोभी भया उदास ।
जन दरिया थाके बनिज, पूरी मन की आस ॥२७॥
ब्रह्म अगिन ऊपर जलै, चलत प्रेम की बाय ।
दरिया सीतल आतमा, [जाका] कर्म कंद† जल जाय२८
कहा कहै किरपा करी, कहै रहै कोइ रूठ ।
जन दरिया बानक‡ बना, राम ठपोरी पूठ§ ॥२९॥
दरिया त्रिकुटी महल में, भई उदासी मोय ।
जहँ सुख है तहँ दुख सही, रबि जहँ रजनी होय ॥३०॥
दरिया मन रंजन कहे, सुखी होत सब कोय ।
मीठे औगुन ऊपजै, कड़ुवा से गुन होय ॥ ३१ ॥

*में । †पुत्ती, जड़ । ‡संजोग । §पीठ ठोकी ।

मीठे राचै लोग सब, मीठे उपजै रोग ।
निरगुन कडुवा नीम सा, दरिया दुर्लभ जोग ॥३२॥
त्रिकुटी के मँझ बहत है, सुख की सलिता जोर ।
जन दरिया सुख दुख परे, वह कोइ देस जो और ॥३३॥
त्रिकुटी माहीं सुख घना, नाहीं दुख का लेस ।
जन दरिया सुख दुख नहीं, वह कोइ अनुभवि देस ॥३४॥

ब्रह्म परचे का अंग

दरिया त्रिकुटी संधि में, महा जुद्ध रन पूर ।
कायर जन पूठा फिरै, सुन पहुंचै कोइ सूर ॥१॥
दरिया मेरु उलंघिया, त्रिकुटी बैठा जाय ।
जो वहँ से पूठा फिरे, तो बिषयों का रस खाय ॥२॥
दरिया मन निज मन भय, त्रिकुटी मंझ समाय ।
जो वहँ से पाछे फिरै, तो मन का मन हो जाय ॥३॥
दरिया देखे दोय पख, त्रिकुटी संधि मँझार ।
निराकार एकै दिसा, एकै दिसा आकार ॥४॥
निराकार आकार बिच, दरिया त्रिकुटी संधि ।
परे अस्थान जो सुरत का, उरे सो मन का बंध ॥५॥
मन बुध चित हंकार की, है त्रिकुटी लग दौड़
जन दरिया इनके परे, ब्रह्म सुरत की ठौर ॥६॥
मन बुध चित हंकार यह, रहैं अपनी हद माहिं
आगे पूरन ब्रह्म है, सो इनकी गम नाहिं ॥७॥

मन बुध चित हंकार के, सुरत सिरोमन जान ।
ब्रह्म सरोवर सुरत के, दरिया संत प्रमान ॥८॥
मन बुध चित हंकार यह, रहैं सुरत के माहिं ।
सुरत मिली जाय ब्रह्म में, जहँ कोइ दूजा नाहिं ॥९॥
मन मेरू* से बावड़ै†, त्रिकुटी लग ओंकार ।
जन दरिया इनके परे, ररंकार निरधार ॥१०॥
दरिया त्रिकुटी हद्द लग, कोइ पहुंचै संत सयान ।
आगे अनहद ब्रह्म है, निराधार निरबान ॥११॥
दरिया त्रिकुटी के परे, अनहद ब्रह्म अलेख ।
जहँ सुरत गैली‡ भई, अनुभव पद को देख ॥१२॥
रतन अमोलक परख कर, रहा जौहरी थाक ।
दरिया तहँ कीमत नहीं, उनमुन भया अबाक§॥१३।
इड़ा पिंगला सुषमना, त्रिकुटी संधि मँझार ।
दरिया पूरन ब्रह्म के, यह भी उल्ली वार ॥१४॥
सुरत उलट आठों पहर, करत ब्रह्म आराध ।
दरिया तबही देखिये, लागी सुन्न समाध ॥१५॥
सुरत ब्रह्म का ध्यान धर, जाय ब्रह्म में पर्स ।
जन दरिया जहँ एकसा, दिवस एक सौ वर्स ॥१६॥
ररंकार धुन हौद में, गरक‖ भया कोइ दास ।
जन दरिया व्यापै नहीं, नींद भूख और प्यास ॥१७॥

---

*पहाड़ । †लौट आवै । ‡हैरान । §चुप । ‖डूब जाना ।

जन दरिया आकास लग, ओंकार का राज ।
महासुन्न तिस के परे, ररंकार महराज ॥ १८ ॥
दरिया सुरति सिरोमनी, मिलि ब्रह्म सरोवर जाय ।
जहँ तीनों पहुंचैं नहीं, मनसा बाचा काय ॥१९॥
काया अगोचर मन्न अगोचर, सब्द अगोचर सोय ।
जन दरिया लवलीन होय, पहुंचैगा जन कोय ॥२०॥
धरती गगन पवन नहिं पानी, पावक चंद न सूर।
रात दिवस की गम नहीं, जहँ ब्रह्म रहा भरपूर ॥२१॥
ररंकार सतगुर ब्रम्ह, दरिया चेला सुर्त ।
जैसे मिल तैसा भया, ज्यौं संचे* माहीं भर्त† ॥२२॥
दरिया सूरति सर्पनी, चढ़ी ब्रह्म के माँय ।
जाय मिली परब्रह्म से, निरभय रही समाय ॥२३॥
दरिया देखत ब्रह्म को, सुरत भई भयभीत ।
तेज पुंज रवि अगिन बिन, जहँ कोइ उष्न न सीत ॥२४॥
पाप पुन्न सुख दुख नहीं, जहँ कोइ कर्म न काल ।
जन दरिया जहँ पड़त है, हीरों की टकसाल ॥२५॥
सुरत निरत परचा भया, अरस परस मिलि एक ।
जन दरिया बानक‡ बना, मिट गया जन्म अनेक ॥२६॥
तज बिकार आकार तज, निराकार को ध्याय ।
निराकार में पैठकर, निराधार लौ लाय ॥२७॥

---

*साँचा । †ताँबा और सीसा से मिल कर बनी हुई धात । ‡औसर ।

सुरत मिली जाय ब्रह्म से, अपनो इष्ट सँभाल ।
जन दरिया अनुभै सबद, जहँ दीखै काल बिसाल॥२८॥
सुरत मिली जाय ब्रह्म से, मन बुध को दे पूठ ।
जन दरिया जहँ देखिये, कथनी बदनी झूठ ॥२९॥
दरिया जहँ लग गगन है, जहँ लग सुरत निवास ।
इनके आगे सुन्न है, जहँ प्रेम भाव परकास ॥३०॥
दरिया अनहद अगिन का, अनुभै धूवाँ जान ।
दूरा सेती देखिये, परसे होय पिछान ॥ ३१ ॥
मान बड़ा अनुभै सबद, दूर देसाँतर जाय ।
अनहद मेरा साइयाँ, घट में रहा समाय ॥ ३२ ॥
प्रथम ध्यान अनुभै करै, जा से उपजै ज्ञान ।
दरिया बहुते करत हैं, कथनी में गुजरान ॥३३॥
अनुभौ झूठी थोथरी, निरगुन सच्चा नाम ।
परम जोत परचै भई, तो धूवाँ से क्या काम ॥३४॥
आँखों से दीखै नहीं, सब्द न पावै जान ।
मन बुध तहँ पहुंचै नहीं, कौन कहै सेलान* ॥३५॥
भाव मिले परभाव से, धर कर ध्यान अखंड ।
दरिया देखै ब्रह्म को, न्यारा दीखै पिंड ॥३६॥
भाव करम सुख दुख नहीं, नहिं कोइ पुन्न न पाप ।
दरिया देखै सुन्न चढ़, जहँ आपहि उर रहा आप ॥३७॥

---

*निशान ।

अगम दरीचा अगम घर, जहँ कोइ रूप न रेख ।
जहँ दरिया दुबिधा नहीं, स्वामी सेवक एक ॥३८॥
सुन्न मँडल में परघटा, प्रेम कथा परकास ।
वकता देव निरंजना, स्रोता दरियादास ॥३९॥
पंछी ऊड़ै गगन में, खोज* मँडै† नहिं माहिं ।
दरिया जल में मीन गति, मारग दरसै नाहिं ॥४०॥
मन बुध चित पहुंचै नहीं, सब्द सकै नहिं जाय ।
दरिया धन वे साधवा, जहाँ रहे लौ लाय ॥४१॥
दरिया सुन्न समाध की, महिमा घनी अनंत ।
पहुंचा सोई जानसी, कोइ कोइ बिरला संत ॥४२॥
एक एक को ध्याय कर, एक एक आराध ।
एक एक से मिल रहे, जाका नाम समाध ॥ ४३ ॥
भाव मिले परभाव से, परभावे पर भाय
दरिया मिलकर मिल रहै, तो आवा गवन नसाय ॥४४॥
पाँच तत्त गुन तीन से, आतम भया उदास ।
सरगुन निरगुन से मिला, चौथे पद में बास ॥४५॥
माया तहाँ न संचरै, जहाँ ब्रह्म का खेल ।
जन दरिया कैसे बनै, रवि रजनी का मेल ॥४६॥
जीव जात से बीछुड़ा, धर पंच तत्त का भेख ।
दरिया निज घर आइया, पाया ब्रह्म अलेख ॥४७॥

*निशान । †पड़ता ।

जात हमारी ब्रह्म है, मात पिता है राम ।
गिरह हमारा सुन्न में, अनहद में बिसराम ॥४८॥

हंस उदास का अंग

कबहुक भरिया समुंद सा, कबहुक नाहीं छाँट* ।
जन दरिया इत उत रता, ते कहिये किरकाँट† ॥१॥
किरकाँटा किस काम का, पलट करै बहु रंग ।
जन दरिया हंसा भला, जद तद एकै रंग ॥ २ ॥
एक रंग उलटी दसा, भीतर भरम न भाल ।
जन दरिया निज दास का, तन मन मता मराल‡ ॥३॥
दरिया हंसा ऊजला, बगुलहु उज्जल होय ।
दोनों एकहि सारिषा, पर चेजै§ पारख‖ जोय ॥४॥
दरिया बगुला ऊजला, उज्जल ही होय हंस ।
वे सरवर मोती चुगैं, वा के मुख में मंस ॥ ५ ॥
वा का चेजा§ ऊजला, वा का खाज निषेद ।
जन दरिया कैसे बनै, हंस बगुल के भेद ॥ ६ ॥
जन दरिया हंसा तना¶, देख बड़ा ब्यौहार ।
तन उज्जल मन ऊजला, उज्जल लेत अहार ॥ ७ ॥
बाहर से उज्जल दसा, भीतर मैला अंग ।
ता सेती कौवा भला, तन मन एकहि रंग ॥ ८ ॥

---

* छींटा । † गिरगिट । ‡ हंस । § चुगा यानी खुराक । ‖ परीक्षा । ¶ का ।

बाहर से उज्जल दसा, अंतर उज्जल होय ।
दरिया सोना सोलहवाँ[*] काँटा[†] न लागै कोय ॥ ९ ॥
मानसरवर मोती चुगै, दूजा नाहीं खान ।
दरिया सुमिरै राम को, सो निज हंसा जान ॥ १० ॥
मानसरोवर बासिया, छीलर[‡] रहै उदास ।
जन दरिया भज राम को, जब लग पिंजर साँस ॥११॥

सुपने का अंग ।

दरिया सोता सकल जग, जागत नाहीं कोय ।
जागे में फिर जागना, जागा कहिये सोय ॥ १ ॥
साध जगावे जीव को, मत[§] कोइ उट्ठै जाग ।
जागे फिर सोवै नहीं, जन दरिया बड़ भाग ॥२॥
माया मुख जागै सबै, सो सूता कर जान ।
दरिया जागै ब्रह्म दिस, सो जागा परमान ॥ ३ ॥
दरिया तो साँची कहै, झूठ न मानै कोय ।
सब जग सुपना नींद में, जान्या जागन होय ॥४॥
साँख जोग नवधा भगति, यह सुपने की रीत ।
दरिया जागै गुरुमुखी, [जाकी] तत्त नाम से प्रीत॥५॥
दरिया सतगुर कृपा कर, सब्द लगाया एक ।
जागत ही चेतन भया, नेतर खुला अनेक ॥ ६ ॥

---

*खरा । †ज़ंग । ‡तलैया । §कदाचित् ।

॥ राग भैरव ॥

सब जग सोता सुध नहिं पावै ।
 बोलै सो सोता बरड़ावै ॥ टेक ॥
संसय मोह भरम की रैन
 अंध धुंध होय सोते ऐन ॥ १ ॥
जप तप संजम औ आचार ।
 यह सब सुपने के व्यौहार ॥ २ ॥
तीर्थ दान जग प्रतिमा सेवा ।
 यह सब सुपना लेवा देवा ॥ ३ ॥
कहना सुनना हार औ जीत ।
 पक्का पक्की सुपनो बिपरीत ॥ ४ ॥
चार बरन और आस्रम चार ।
 सुपना अंतर सब व्यौहार ॥ ५ ॥
खट दरसन आदि भेद भाव ।
 सुपना अंतर सब दरसाव ॥ ६ ॥
राजा राना तप बलवंता ।
 सुपना माहीं सब बरतंता ॥ ७ ॥
पीर औलिया सबै सयान ।
 ख़्वाब माहिं बरतैं बिध नाना ॥ ८ ॥
काजी सैयद औ सुलताना ।
 ख़्वाब माहिं सब करत पयाना ॥ ९ ॥

साँख जोग औ नौधा भक्ती।
सुपना में इनकी इक बिरती ॥ १० ॥
काया करनी दया औ धर्म।
सुपने सुर्ग औ बंधन कर्म ॥ ११ ॥
काम क्रोध हत्या पर नास।
सुपना माहीं नर्क निवास ॥ १२ ॥
आदि भवानी संकर देवा।
यह सब सुपना लेवा देवा ॥ १३ ॥
ब्रह्मा बिस्नू दस औतार।
सुपना अंतर सब ब्यौहार ॥ १४ ॥
उद्भिज सेतज जेरज अंडा।
सुपन रूप बरतै ब्रह्मंडा ॥ १५ ॥
उपजै बरतै अरु बिनसावै।
सुपने अंतर सब दरसावै ॥ १६ ॥
त्याग ग्रहन सुपना ब्यौहारा।
जो जागा सो सब से न्यारा ॥ १७ ॥
जो कोइ साध जागिया लावै।
सो सतगुर के सरनै आवै ॥ १८ ॥
कृत कृत बिरला जोग सभागी।
गुरमुख चेत सब्द मुख जागी ॥ १९
संसय मोह भरम निस नास।
आतम राम सहज परकास ॥ २० ॥

राम सँभाल सहज धर ध्यान ।
पाछे सहज प्रकासै ज्ञान ॥ २१ ॥
जन दरियाव सोई बड़ भागी ।
जा की सुरत ब्रह्म सँग जागी ॥ २२ ॥

साध का अंग ।

दरिया लच्छन साध का, क्या गिरही क्या भेख ।
निःकपटी निरसंक रहि, बाहर भीतर एक ॥ १ ॥
सतगुर को परसा नहीं, सीखा सब्द सुहेत ।
दरिया कैसे नींपजै, तेह-बिहूना* खेत ॥ २ ॥
सत्त सब्द सत गुरमुखी, मत गजंद† मुख दंत ।
यह तो तोड़ै पौल गढ़, वह तोड़ै करम अनंत ॥३॥
दाँत रहै हस्ती बिना, तो पौल न टूटै कोय ।
कै कर धारै कामिनी, कै खेलाराँ‡ होय ॥ ४ ॥
साध कह्यो भगवंत कह्यो, कहै ग्रंथ और बेद ।
दरिया लहै न गुरु बिना, तत्त नाम का भेद ॥५॥
राजा बाँटै परगना, जो गढ़ को पति होय ।
सतगुरु बाँटै राम रस, पीवै बिरला कोय ॥ ६ ॥
मतबादी जानै नहीं, ततबादी की बात ।
सूरज ऊगा उल्लुवा, गिनै अँधारी रात ॥७॥

---

*बिना तर किया हुआ । †हाथी । ‡खिलौना ।

भीतर अँधारी भीत सी, बाहर जगा भान ।
जन दरिया कारज कहा, भीतर बहुली हान ॥८॥
सीखत ज्ञानी ज्ञान गम, करै ब्रह्म की बात ।
दरिया बाहर चाँदना, भीतर काली रात ॥९॥
बाहर कुछ समझै नहीं, जस रात अँधेरी होत ।
जन दरिया भय कुछ नहीं, जो भीतर जागै जोत ॥१०॥

चिंतामनि का अंग

चिंतामनि चौकस चढ़ी, सही रंक के हाथ ।
ना काहू के सँग मिलै, ना काहू से बात ॥१॥
दरिया चिंतामनि रतन, धरयो स्वान पै जाय ।
स्वान सूंघ कानैं* भया, वह टूका ही चाय ॥२॥
दरिया हीरा सहस दस, लख मन कंचन होय ।
चिंतामनि एकै भला, ता सम तुलै न कोय ॥३॥

अपारख का अंग

हीरा हलाहल† क्रोड़ का, जा का कौड़ी मोल ।
जन दरिया कीमत बिना, बरतै डाँवाँडोल ॥१॥
हीरा लेकर जौहरी, गया गँवारै देस ।
देखा जिन कंकर कहा, भीतर परख न लेस ॥२॥
दरिया हीरा क्रोड़ का, [जाकी] कीमत लखै न कोय ।
जबर मिलै कोइ जौहरी, तबही पारख होय ॥३॥

---

*किनारे। †बिलकुल।

आइ पारख चेतन भया, मन दे लीना मोल ।
गाँठ बाँध भीतर धसा, मिट गइ डाँवाँडोल ॥४॥
कंकर बाँधा गाँठड़ी, कर हीरा का भाव ।
खोला कंकर नीसरा, झूठा यही सुभाव ॥५॥

उपदेश का अंग

जन दरिया उपदेस दे, जा के भीतर चाय ।
नातर गैला* जगत से, बक बक मरै बलाय ॥१॥
दरिया बहु बकवाद तज, कर अनहद से नेह ।
औंधा कलसा ऊपरे, कहा बरसावै मेह ॥२॥
बिरही प्रेमी मोम-दिल, जन दरिया निःकाम ।
आसिक दिल दीदार का, जासे कहिये राम ॥३॥
जन दरिया उपदेस दे, [जाके] भीतर प्रेम सधीर ।
गाहक होय कोइ हींग का, [जाको] कहा दिखावै हीर ४
दरिया गैला* जगत से, समझ औ मुख से बोल ।
नाम रतन की गाँठड़ी, गाहक बिन मत खोल ॥५॥
दरिया गैला जगत को, क्या कीजै समझाय ।
चलना है दिस उतर को, दक्खिन दिस को जाय ॥६॥
दरिया गैला जगत को, कैसे दीजै सीख ।
सौ कोसाँ चालन करै, चाल न जानै बीख† ॥७॥

---

* बावला । † क़दम ।

दरिया गैला जगत को, कैसे दीजे हेत ।
जो सौ बेरा छानिये, तौहू रेत की रेत ॥८॥
दरिया गैला जगत को, क्या कीजै सुलझाय ।
सुलझाया सुलझै नहीं, फिर सुलझ सुलझ उलझाय ।९
दरिया गैला जगत को, क्या कीजै समझाय ।
रोग नीसरै देह में, पत्थर पूजन जाय ॥१०॥
भेड़ गती संसार की, हारे गिनै न हार ।
देखा देखि परबत चढ़ै, देखा देखी खाड़* ॥११॥
दरिया सौ अंधा खिचै, एक सुझाको जाय ।
वह तो बात देखी कहै, वा के नाहीं दाय† ॥१२॥
दरिया सारा‡ अंध को, कहै देख देख कुछ देख ।
अंध कहै सूझै नहीं, कोइ पूरबला लेख ॥१३॥
कंचन कंचन ही सदा, काँच काँच सो काँच ।
दरिया झूठ सो झूठ है, साँच साँच सो साँच ॥१४॥
जन दरिया निज साँच का, साँचा ही व्योहार ।
झूठ झूठ ही नीवड़ै, जा में फेर न सार ॥१५॥
दरिया साँच न संचरै, जब घर घालै झूठ ।
साँच आन परगट हुआ, जब झूठ दिखावै पूठ॥१६॥
जन दरिया इस झूठ की, डागल§ ऊपर दौड़ ।
साँचि दौड़ चौगान में, सो संतों सिर मौर ॥१७॥
कानों सुनी सो झूठ सब, आँखों देखी साँच ।
दरिया देखे जानिये, यह कंचन यह काँच ॥१८॥

*गढ़ा । †पसंद । ‡निपट । §छत ।

साध पुरुष देखी कहैं, सुनी कहैं नहिं कोय ।
कानों सुनी सो झूठ सब, देखी साँचो होय ॥१९॥
दरिया आगे साँच के, झूठ किती इक बात ।
जैसे ऊगे भान के, रात अँधारी जात ॥२०॥
दरिया साँचा राम है, और सकल ही झूठ ।
सनमुख रहिये राम से, दे सबही को पूठ ॥२१॥
दरिया साँचा राम है, फिर साँचा है संत ।
वह तो दाता मुक्ति का, वह मुख नाम कहंत ॥२२॥
दरिया गुरु दरियाव की, साध चहूँ दिस नहर ।
संग रहै सोई पियै, नाहिं फिरै तृषाया बहर ॥२३॥
साध सरोवर राम जल, राग द्वेस कुछ नाहिं ।
दरिया पीवै प्रीत कर, सो निरपत हो जाहि ॥२४॥
जन दरिया गुन गाय ले, बहता अंग सरीर ।
बलिहारी उस अंग की, खैंचा निकसै छीर ॥२५॥
साधू जल का एक अँग, बरतै सहज सुभाव ।
ऊंची दिसा न संचरै, निवन* जहाँ ढलकाव ॥२६॥
दरिया नाके पौल के, इक पंछी आवै जाय ।
ऐसे साधू जक्त में, बरतैं सहज सुभाय ॥ २७ ॥
मच्छी पंछी साध का, दरिया मारग नाहिं ।
अपनी इच्छा से चलैं, हुकम धनी के माहिं ॥२८॥

---

*नीचा।

साधू चंदन बावना, [जाके] एक राम की आस ।
जन दरिया इक राम बिन, सब जग आक पलास २९

पारस का अंग

जन दरिया पट धात का, पारस कीया नाँव ।
परसा सो कंचन भया, एक रंग इक भाव ॥ १ ॥
दरिया छुरी कसाब की, पारस परसे आय ।
लोह पलट कंचन भया, आमिष[†] भखा न जाय ॥२॥
लोह काला भीतर कठिन, पारस परसे सोय ।
उर नरमी अति निरमला, बाहर पीला होय ॥३॥
पारस परसा जानिये, जो पलटै अँग अंग ।
अंग अंग पलटै नहीँ, तौ है झूठा संग ॥४॥
पारस जाकर लाइये, जाके अंग मेँ गात[‡] ।
क्या लावै पाषान को, घस घस होय संताप ॥५॥
दरिया काँटी[§] लोह की, पारस परसै सोय ।
धात बस्तु भीतर नहीँ, कैसे कंचन होय ॥ ६ ॥

---

*बावना चंदन उस असल चंदन को कहते हैं जिस के पास के दरख़त मलियागिर पर सब सुगंधित हो जाते हैं। †माँस। ‡जौहर। §मैल।

भेष का अंग

दरिया काँटी* भेष सब, भीतर घात न प्रेम।
कली† लगावै कपट की, नाम धरावै हेम‡ ॥१॥

दरिया काँचे दूध का, बानो सो बन जाय।
दूध फाट काँजी भई, तहँ गुन कहाँ समाय ॥२॥

दरिया काँजी भेष है, फाड़ै काँचा दूध।
अड़ँग बड़ँग कर आतमा, मेटै साँची सूध ॥ ३ ॥

बारह बाटै बहत है, दरिया जगत औ भेष।
तू बहता सँग मत बहै, रहता साहब देख ॥ ४ ॥

दरिया बिल्ली गुरु किया, उज्जल बगु को देख।
जैसे को तैसा मिला, ऐसा जक्त और भेष ॥५॥

चौकी बैठी काल की, दरिया कलु के भेष।
इन सबही को पूठ दे, सनमुख साहिब देख ॥ ६

दरिया संगत भेष की, हुई मिटावे साँट§।
परदा घालै राम बिच, करदे बारह बाट ॥ ७ ॥

दरिया स्वाँगी भेष का, आगा पाछा‖ अंग।
जैसे कपड़ा पास¶ बिन, लागत नाहीं रंग ॥ ८ ॥

दरिया संगी साध का, अंतर प्रेम प्रकास।
राम भजै साँचे मते, दूजे धुंध निकास ॥ ९ ॥

---

*मैल। †कुलई। ‡सोना। §संधि। ‖उलटा पलटा। ¶जामन।

पिरथम हम यों जानते, स्वाँग धरे सो साध ।
सतगुर से परचा भया, दीसी मोटि विराध ॥१०॥
दरिया संगी स्वाँग का, जा का विकल सरीर ।
मतलब देखै आप का, नहिं जानै पर पीर ॥११॥
दरिया साध और स्वाँग का, क्रोड़ कोस का बीच
राम रता साँचा मता, स्वाँग काल की कीच ॥१२॥
दरिया परसै साध को, तो उपजै साँचो सीष ।
जो कोइ परसै भेष को, ताहि मँगावै भीष ॥१३॥
साध स्वाँग में आँतरा, जैसा दिवस औ रात ।
इनके आसा जगत की, उन को राम सुहात ॥१४॥
साध स्वाँग अस आँतरा, जेता झूठ और साँच ।
मोती मोती फेर बहु, इक कंचन इक काँच ॥१५॥
साध स्वाँग अस आँतरा, जस कामी निःकाम ।
भेष रता ते भीख में, नाम रता ते राम ॥ १६ ॥
भेष बिजूका* नाम का, कायर को डरपाय ।
दरिया सिंघा ना डरै, जहाँ नाम तहँ जाय ॥१७॥
भेष बिजूका* नाम का, देखत डरै कुरंग† ।
दरिया सिंघा ना डरै, भीतर निर्भय अंग ॥ १८ ॥

---

* एक जानवर का नाम जो चौपायों के पेट के अंदर घुस कर माँस खा जाता है । † हिरन ।

तन पर भेष बनाय के, मकर पकड़ भया सूर ।
संग लगाया लग रहै, दूर किया होय दूर ॥ १९ ॥
दरिया ऐसा भेष है, जैसा अड़वा* खेत ।
बाहर चेतन की रहन, भीतर जड़ अचेत ॥ २० ॥
स्वाँग कहै मैं पेट भराऊँ, डहकाऊँ† संसार ।
राम नाम जाने बिना, बोरूँ काली धार ॥ २१ ॥
दरिया सब जग आँधरा, सूझै न काज अकाज ।
भेष रता अंधा सबै, अंधाई का राज ॥ २२ ॥
माला फेरे क्या भया, मन फाटै कर भार ।
दरिया मन को फेरिये, जासैं बसै विकार ॥ २३ ॥
जो मन फेरै राम दिस, कल बिष नासै धोय ।
दरिया माला फेरते, लोग दिखावा होय ॥ २४ ॥
कंठी माला काठ की, तिलक गार का होय ।
जन दरिया निज नाम बिन, पार न पहुंचै कोय ॥२५॥
पाँच सात साखी कही, पद गाया दस दोय ।
दरिया कारज ना सरै, पेट भराई होय ॥ २६ ॥
साँख जोग पपील‡ गति, बिघन पड़ै बहु आय ।
बावल§ लागै गिर पड़ै, मँजिल न पहुंचै जाय॥२७॥
भक्ती सार बिहंग गति, जहँ इच्छा तहँ जाय ।
श्री सतगुर रच्छा करैं, बिघन न ब्यापै ताय॥२८॥

---

* काली हाँडी वग़ैरह जो जानवरों के डराने को खेत में खड़ी कर देते हैं । † भटकाऊं । ‡ चीटी । § बगूला ।

मिश्रित साखी

दरिया सब जग आँधरा, सूझै सो बेकाम ।
भीतर का नेतर खुला, तबही दरसै राम ॥ १ ॥
दरिया सब जग आँधरा, सूझै नहीं लगार* ।
औषध है सतसंग का, सतगुर बोलनहार ॥ २ ॥
दरिया गुरु किरपा करी, सब्द लगाया एक ।
जागत ही चेतन भया, नेतर खुला अनेक ॥ ३
दरिया भागे भरम सब, पाया राम महबूब ।
जाके भान उगै नहीं, दीपक करना खूब ॥ ४ ॥
आन धरम दीपक दसा, भरम तिमर होय तास ।
दरिया दीपक क्या करै, [जाके]-राम रवी परकास ॥५॥
दरिया सूरज ऊगिया, सब भ्रम गया बिलाय ।
उर में गंगा परगटी, सरवर काहे जाय ॥ ६ ॥
दरिया सूरज ऊगिया, नैन खुला भरपूर ।
जिन अंधे देखा नहीं, तिन से साहब दूर ॥७॥
दरिया सूरज ऊगिया, चहुं दिस भया उजास ।
राम प्रकासै देह में, तो सकल भरम का नास ॥ ८ ॥
पाय बिसारै राम को, भ्रष्ट होत है सोय ।
रवि दीपक दोनों बिना, अंधकार ही होय ॥ ९ ॥
पाय बिसारै राम को, बैठा सब ही खोय ।
दरिया पड़ै अकास चढ़, राखनहार न कोय ॥१०॥

---

*पास ।

पाय बिसारै राम को, महा अपराधी सोय ।
दरिया तीनों लोक में, इसा न दूजा कोय ॥११॥
पाय बिसारै राम को, तीन लोक तल होय ।
जन दरिया अघ जीव का, दिन दिन दूना होय ॥१२॥
बड़ के बड़ लागै नहीं, बड़ के लागै बीज ।
दरिया नान्हा होय कर, राम नाम गह चीज ॥१३॥
रसना अंतर वाहिये, लोक लाज सब खोय ।
दरिया पानी प्रेम का, सींच सहज बड़ होय ॥१४॥
दरिया तीनों लोक में, देखा दोय विनान ।
गुजरानी गुजरान में, गलतानी गलतान ॥ १५ ॥
गुजरानी गलतान की, दरिया ये पहिचान ।
आन रता गुजरान सब, कोइ नाम रता गलतान ॥१६॥
सोई कंथ कबीर का, दादू का महराज ।
सब संतन का बालमा, दरिया का सिरताज ॥ १७ ॥
दरिया तीनों लोक में, ढूंढा सबही धाम ।
तीर्थ बर्त बिधि करत बहु, बिना राम किन काम ॥१८॥
तीन लोक चौदह भवन, दरिया देखा जोय ।
राम सरीखा राम है, इसा न दूजा कोय ॥ १९ ॥
तीन लोक चौदह भवन, ढूंढा सबही धाम ।
दरिया देखा निरत कर, राम सरीखा राम ॥ २० ॥

जोतिये ।

दरिया परछे नाम के, दूजा दिया न जाय ।
तन मन आतम वार कर, राखीजै उर माँय ॥ २१ ॥
दरिया सुमिरै राम को, [जाकी] पारख कीजै जाय ।
सरवन ढल नेतर ढलै, देह रसना ढल जाय ॥ २२ ॥
दरिया सतगुरु सब्द ले, करै राम संयोग ।
ज्ञान खुलै अरवल[†] बढ़ै, देही रहै निरोग ॥ २३ ॥
दरिया प्रेमी आतमा, करै राम का गाढ़ ।
आवै उवासी चौगुनी, भाजन लागै हाड़ ॥ २४ ॥
कंचन भाजन[‡] विष भरा, सो मेरे किस काम ।
दरिया वासन सो भला, जा में अमृत राम ॥ २५ ॥
जो काया कंचन मई, रतनों जड़िया चाम ।
दरिया कहै किस काम का, जो मुख नाहीं राम ॥ २६ ॥
राम सहित मध्यम भला, गलत कोढ़ होय अंग ।
उत्तम कुल का त्याग कर, रहिये उन के संग ॥ २७ ॥
कस्तूरी कूंड़े[§] भरी, मेली ऊँड़े[||] ठाँय ।
दरिया छानी क्यों रहै, साख भरै सब गाँय ॥ २८ ॥
कूंड़ा[¶] आला[**] चाम का, भीतर भरा कपूर ॥
दरिया वासन क्या करै, वस्तु दिखावै नूर ॥ २९ ॥
जन दरिया पुन पाप के, थोथे तीराँ जूझ ।
करै दिखावा और को, आप समाहै गूंझ ॥ ३० ॥

---

*बदले । †उमर । ‡बरतन । §कुप्पा । ||गहरा । ¶छिपी । **गीला ।

पाप पुन्न सुख दुःख की, अरट* भरत है साख ।
जन दरिया रह राम लग, वहँ सबही को राख† ॥३१॥
जीव बिलंब्या‡ जीव से, कारज सरै न कोय ।
जन दरिया सतगुरु मिलै, तो ब्रह्म बिलंबन§ होय ॥३२॥
जीव बिलंबन झूठ है, मिल मिल बिछुड़े जाय ।
ब्रह्म बिलंबन साँच है, रह उर माँहि समाय ॥३३॥
सकल आदि सब के परे, है अबिनासी राम ।
उपजै बर्तै बिनसजै‖, माया रूपी काम ॥३४॥
दरिया दस दरवाज में, ता बिच पढ़त निमाज ।
ररो ममो इक रटत है, और सकल बेकाज ॥३५॥
दरिया खेती नीपजी, सिरेपान गया सूख ।
हरियाली मिट कन भया, भीतर भागी भूख ॥३६॥
रवि ससि चालै पूर्ब दिस, पछिम कहै सब लोय ।
दरिया यह गत साध की, लखै सो बिर्ला कोय ॥३७॥
समुंद खार गंगा गदल, जल गुनवंता सीत ।
रवी तेज ससि छिद्रता, दरिया संताँ रीत ॥३८॥
दरिया दीपक राम का, गगन मंडल में जोय ।
तीन लोक चौदह भवन, सहज उजाला होय ॥३९॥
दरिया राजस दूर कर, ररंकार लौ लाय ।
राम छाँड़ राजस गहै, भौ भौ पर ले जाय ॥४०॥

---

*रहट । †ठहराव । ‡फँस गया । §मेला । ‖नाश हो ।

सब्द सुहाया बादसाह, साधन सैना जान ।
सैना सहजै आवसी, जो चढ़ आवै सुलतान ॥४१॥
दरिया लच्छन साध का, क्या गिरही क्या भेष ।
निःकपटी निर्पच्छ रह, बाहर भीतर एक ॥ ४२ ॥
रहनी करनी साध की, एक राम का ध्यान ।
बाहर मिलता सो मिलै, भीतर आतम ज्ञान ॥४३॥
तरवर छाना* फल नहीं, पिरथी से बनराय ।
सतगुरु छाना सिष नहीं, दूर देसंतर जाय ॥ ४४ ॥
दरिया संगत साध की, सहजै पलटै बंस ।
कीट छाँड़ मुक्ता चुगै, होय काग से हंस ॥ ४५ ॥
साँची संगत साध की, जो कर जानै कोय ।
दरिया ऐसी सो करै, [जेहि] कारज करना होय ॥४६॥
दरिया संगत साध की, सहजै पलटै अंग ।
जैसे संग मजीठ के, कपड़ा होय सुरंग ॥ ४७ ॥
दरिया संगत साध की, कल बिष नासै धोय ।
कपटी की संगत किये, आपहु कपटी होय ॥४८॥
सतगुरु को परसा नहीं, सुमिरा नाहीं राम ।
ते नर पसू समान हैं, साँस लेत बेकाम ॥ ४९ ॥
माया माया सब कहै, चीन्है नाहीं कोय ।
जन दरिया निज नाम बिन, सबही माया होय ॥५०॥

---

*छिपा हुआ ।

गिरह माहिं धंधा घना, भेष माहिं हलकान* ।
जन दरिया कैसे भजूं, पूरन ब्रह्म निदान ॥ ५१ ॥
फूलों में फल मान कर, भली बिभूती जाय ।
अति सीतल सुगंधिता, नवधा भक्ति उपाय ॥५२॥
फूलों में फल आन कर, जाय बिभूती येह ।
ता से तो मनुवाँ भला, सकल त्याग फल लेह ॥५३॥
दरिया घन बहुता मिला, तू नहिं जानत मोहिं ।
ता से नैनन रहित है, साँच कहत हूं तोहिं ॥५४॥
जन दरिया अँग साध का, सीतल बचन सरीर ।
निर्मल दसा कमोदिनी, मिले मिटावे पीर ॥ ५५ ॥
संकट पड़ै जब साध को, सब संतन के सोग ।
दरिया सहाय करैं हरी, परचे मानैं लोग ॥ ५६ ॥
बातों में ही बह गया, निकस गया दिन रात ।
मुहलत अब पूरी भई, आन पड़ी जम घात ॥ ५७ ॥
दरिया औषध राम रस, पीये होत समाध ।
महा रोग जीवन मरन, तेहि को लगै न ब्याध ॥५८॥
दरिया निरगुन राम है, सरगुन सतगुर देव ।
यह सुमिरावैं राम को, वो है अलष अभेव ॥ ५९ ॥
जारी गावै कृस्न की, हड्डी जरावै सीत ।
दरिया कैसे जानिहै, राम नाम की रीत ॥ ६० ॥

---

*परेशानी ।

दरिया अमल* है आसुरी, पिये होय सैतान ।
राम रसायन जो पिये, सदा छाकाँ† गलतान ॥ ६१ ॥
नारी आवै प्रीत कर, सतगुर परसै आन ।
दरिया हित उपदेस दे, माय बहिन धी जान ॥ ६२ ॥
नारी जननी जगत की, पाल पोस दे पोष ।
मूरख राम बिसार कर, ताहि लगावै दोष ॥ ६३ ॥
ररा तो रब आप है, ममा मोहम्मद जान ।
दोय हरफ में माइना‡, सबही वेद पुरान ॥ ६४ ॥
ररंकार अनहद्द की, दरिया परख अवाज ।
और इष्ट पहुंचै नहीं, जहाँ राम का राज ॥ ६५ ॥
सिव ब्रह्मा और बिस्नु का, येही उरे मँडान ।
जन दरिया इन के परे, निरंजन का नीसान ॥ ६६ ॥
दरिया देही गुरमुखी, अबिनासी की हाट ।
सनमुख होय सौदा करै, सहजहि खुलै कपाट ॥ ६७ ॥
अरँड आक अरु बाँस तरु, होता चंदन संग ।
गाँठ गँठीला थोथरा, पलटा नाहीं अंग ॥ ६८ ॥
उभय करम बंधन करै, नाम करै भय हान ।
दरिया ऐसे दास के, बरतै खैंचा तान ॥ ६९ ॥
दरिया दुखिया जब लगी, पछा पछी बेकाम ।
सुखिया जबही होयगा, राज निकंटा राम ॥ ७० ॥

---

*नशा । †मस्त । ‡अर्थ ।

दृष्ट न मुष्ट न अगम है, अति हीं करड़ा काम ।
दरिया पूरन ब्रह्म में, कोइ संत करै बिसराम ॥७१॥

॥ राग भैरो ॥

आदि अनादी मेरा साँईं ॥ टेक ॥
दृष्ट न मुष्ट है अगम अगोचर ।
यह सब माया उनहीं माईं ॥ १ ॥
जो बन माली सींचै मूल ।
सहजै पिवै डाल फल फूल ॥ २ ॥
जो नरपति को गिरह बुलावै ।
सेना सकल सहज ही आवै ॥ ३ ॥
जो कोई कर भान प्रकासै ।
तो निस तारा सहजहिं नासै ॥ ४ ॥
गरुड़ पंख जो घर में लावै ।
सर्प जाति रहने नहिं पावै ॥ ५ ॥
दरिया सुमिरै एकहि राम ।
एक राम सारै सब काम ॥ ६ ॥

जो सुमिरूँ तो पूरन राम ॥ टेक ॥
अगम अपार पार नहिं जा की ।
है सब संतन का बिसराम ॥ १ ॥
कोट बिस्नु जा के अगवानी ।
संख चक्र सत सारँग पानी ॥ २ ॥

कोट कारकुन बिध कर्मधार ।
  परजापति मुनि बहु बिस्तार ॥ ३ ॥
कोट काल संकर कोतवाल ।
  भैरव दुर्गा धरम बिचार ॥ ४ ॥
अनंत संत ठाढ़े दरबार ।
  आठ सिधि नौ निधि द्वारपाल ॥ ५ ॥
कोट बेद जा को जस गावै ।
  बिद्या कोट जा को पार न पावै ॥ ६ ॥
कोट अकास जा के भवन दुवारे ।
  पवन कोट जा के चँवर दुरावै ॥ ७ ॥
कोट तेज जा के तपै रसोय ।
  बरुन कोट जा के नीर समोय ॥ ८ ।
पृथी कोट फुलवारी गंध ।
  सुरत कोट जा के लाया बंध ॥ ९ ॥
चंद सूर जा के कोट चिराग ।
  लछमी कोट जा के राँधैं पाग ॥ १०
अनंत संत और खिलवतखाना ।
  लख चौरासी पलै दिवाना ॥ ११ ॥
कोट पाप काँपैं बल-छीन ।
  कोट धरम आगे आधीन ॥ १२ ॥
सागर कोट जा के कलसधार ।
  छपन कोट जा के पनिहार ॥ १३ ॥

कोट सँतोष जा के भरा भंडार ।
    कोट कुबेर जा के मायाधार ॥ १४ ॥
कोट स्वर्ग जा के सुख रूप ।
    कोट नर्क जा के अंध कूप ॥ १५ ॥
कोट करम जा के उत्पतकार ।
    किला कोट बरतावनहार ॥ १६ ॥
आदि अंत मद्ध नहिं जा को ।
    कोई पार न पावै ता को ॥ १७ ॥
जन दरिया के साहब सोई ।
    ता पर और न दूजा कोई ॥ १८ ॥

जा के उर उपजी नहिं भाई ।
    सो क्या जाने पीर पराई ॥ टेक ॥
ब्यावर जानै पीर की सार ।
    बाँझ नार क्या लखै बिकार ॥ १ ॥
पतिब्रता पति को ब्रत जानै ।
    बिभचारिन मिल कहा बखानै ॥ २
हीरा पारख जौहरी पावै ।
    मूरख निरख के कहा बतावै ॥ ३ ॥
लागा घाव कराहै सोई ।
    कोगतहार* के दर्द न कोई ॥ ४ ॥

---

*बनावट करनेवाला ।

राम नाम मेरा प्रान-अधार ।
सोई राम रस पीवनहार ॥ ५ ॥
जन दरिया जानैगा सोई ।
[जाके] प्रेम की भाल कलेजे पोई ॥ ६ ॥

जो धुनियाँ तौ भी मैं राम तुम्हारा ।
अधम कमीन जाति मतिहीना,
तुम तो हैा सिरताज हमारा ॥ टेक ॥
काया का जंत्र सब्द मन मुठिया,
सुषमन ताँत चढ़ाई ।
गगन मँडल में धुनुआँ बैठा,
मेरे सतगुर कला सिखाई ॥ १ ॥
पाप पान हर* कुबुध काँकड़ा†,
सहज सहज झड़ जाई ।
घुंडी गाँठ रहन नहिं पावै,
इकरंगी होय आई ॥ २ ॥
इकरँग हुआ भरा हरि चोला,
हरि कहै कहा दिलाऊँ ।
मैं नाहीं मेहनत का लोभी,
बकसो मौज भक्ति निज पाऊँ ॥ ३ ॥

---

*पाप रूपी पत्ते दूर करके । † बिनौले ।

किरपा कर हरि बोले बानी,
तुम तो हौ मम दास ।
दरिया कहै मेरे आतम भीतर,
मेलौ राम भक्ति बिस्वास ॥ ४ ॥

आदि अंत मेरा है राम ।
उन बिन और सकल बेकाम ॥ १ ॥
कहा करूँ तेरा बेद पुराना ।
जिन है सकल जगत भरमाना ॥ २ ॥
कहा करूँ तेरी अनुभै बानी ।
जिन तें मेरी सुद्धि भुलानी ॥ ३ ॥
कहा करूँ ये मान बड़ाई ।
राम बिना सबही दुखदाई ॥ ४ ॥
कहा करूँ तेरा सांख और जोग ।
राम बिना सब बंधन रोग ॥ ५ ॥
कहा करूँ इन्द्रिन का सुक्ख ।
राम बिना देवा सब दुक्ख ॥ ६ ॥
दरिया कहै राम गुरमुखिया ।
हरि बिन दुखी राम सँग सखिया ॥ ७ ॥

॥ राग पंचम ॥

पतिब्रता पति मिली है लाग ।
जहँ गगन मँडल में परम भाग ॥ टेक ॥

जहँ जल बिन कँवला बहु अनंत ।
 जहँ बपु* बिन भौंरा गोह† करंत ॥ १ ॥
अनहद बानी अगम खेल ।
 जहँ दीपक जरै बिन बाती तेल ॥ २ ॥
जहँ अनहद सब्द है झरत घोर ।
 बिन मुख बोलै चात्रिक मोर ॥ ३ ॥
बिन रसना गुन उदत नार ।
 पाँव बिन पातर‡ निरतकार ॥ ४ ॥
जहँ जल बिन सरवर भरा पूर ।
 जहँ अनंत जोत बिन चन्द सूर ॥ ५ ॥
बारह मास जहँ ऋतु बसंत ।
 ध्यान धरैं जहँ अनंत संत ॥ ६ ॥
त्रिकुटी सुखमन चुवत छीर ।
 बिन बादल बरखै मुक्ति नीर ॥ ७ ॥
अमृत धारा चलै सीर§ ।
 कोइ पीवै बिरला संत धीर ॥ ८ ॥
ररंकार धुन अरूप एक ।
 सुरत गही उनही की टेक ॥ ९ ॥
जन दरिया बैराट चूर ।
 जहँ बिरला पहुंचै संत सूर ॥ १० ॥

* शरीर । † गुंजार । ‡ बेश्या । § ठंडी ।

चल चल रे हंसा राम सिंध ।
बागड़[*] में क्या रह्यो बंध ॥ टेक ॥
जहँ निर्जल धरती बहुत धूर ।
जहँ साकित बस्ती दूर दूर ॥ १ ॥
ग्रीषम[†] ऋतु में तपै भोम ।
जहँ आतम दुखिया रोम रोम ॥ २ ॥
भूख प्यास दुख सहै आन ।
जहँ मुक्ताहल नहिं खान पान ॥ ३ ॥
जउवा[‡] नारू[§] दुखित रोग ।
जहँ मैं तैं बानी हरष सोग ॥ ४ ॥
माया बागड़[*] बरनी येह ।
अब राम सिंध बरनूं सुन लेह ॥ ५ ॥
अगम अगोचर कथ्या ना जाय ।
अब अनुभव माहीं कहूं सुनाय ॥ ६ ॥
अगम पंथ है राम नाम ।
गिरह बसौ जाय परम धाम ॥ ७ ॥
मान सरोवर बिमल नीर ।
जहँ हंस समागम तीर तीर ॥ ८ ॥
जहँ मुक्ताहल बहु खान पान । ।
जहँ अवगत तीरथ नित सनान ॥ ९ ॥

---

* सूखी धरती । † गरमी । ‡ एक तरह के कीड़े । § बीमारी का नाम ।

पाप पुन्न की नहीं छोत ।
जहँ गुरु सिष मेला सहज होत ॥ १० ॥
गुन इंद्री मन रहे थाक ।
जहँ पहुंच न सक्के वेद वाक ॥ ११ ॥
अगम देस जहँ अभयराय ।
जन दरिया सुरत अकेली जाय ॥ १२ ॥

* *

चल सूवा तेरे आद राज ।
पिंजरा में बैठा कौन काज ॥ टेक ॥
बिल्ली का दुख दहै जोर ।
मारे पिंजरा तोर तोर ॥ १ ॥
मरने पहले मरो धीर ।
जो पाछे मुक्ता सहज कीर ॥ २ ॥
सतगुर सब्द हृदे में धार
सहजाँ सहजाँ करो उचार ॥ ३ ॥
प्रेम प्रवाह घसै जब आभ ।
नाद प्रकासै परम लाभ ॥ ४ ॥
फिर गिरह बसावो गगन जाय ।
जहँ बिल्ली मृत्यु न पहुंचै आय ॥ ५ ॥
आम फलै जहँ रस अनंत ।
जहँ सुख में पावो परम तंत ॥ ६ ॥

झिरमिर झिरमिर बरसै नूर ।
बिन कर बाजै ताल तूर ॥ ७ ॥
जन दरिया आनंद पूर ।
जहं बिरला पहुंचै भाग भूर ॥ ८ ॥

* * *

राग बिहंगड़ा

नाम बिन भाव करम नहिं छूटै ॥ टेक ॥
साध संग और राम भजन बिन ।
काल निरंतर लूटै ॥ १ ॥
मल सेती जो मल को धोवै ।
सो मल कैसे छूटै ॥ २ ॥
प्रेम का साबुन नाम का पानी ।
दोय मिल ताँता टूटै ॥ ३ ॥
भेद अभेद भरम का भाँडा ।
चौड़े पड़ पड़ फूटै ॥ ४ ॥
गुरमुख सब्द गहै उर अंतर ।
सकल भरम से छूटै ॥ ५ ॥
राम का ध्यान तू धर रे प्रानी ।
अमृत का मेंह बूटै ॥ ६ ॥
जन दरियाव अरप दे आपा ।
जरा मरन तब टूटै ॥ ७ ॥

* *

दुनियाँ भरम भूल बौराई ।
आतम राम सकल घट भीतर, जा की सुद्ध न पाई । टेक
मथुरा कासी जाय द्वारिका, अरसठ तीरथ न्हावै ।
सतगुर बिन सोधा नहिं कोई, फिर फिर गोता खावै १
चेतन मूरत जड़ को सेवै, बड़ा थूल मत गैला* ।
देह अचार किया कहा होई, भीतर है मन मैला ॥२॥
जप तप संजम काया कसनी, सांख जोग ब्रत दाना ।
या तें नहीं ब्रह्म से मेला, गुन हर करम बँधाना ॥३॥
बकता होय होय कथा सुनावै, स्रोता सुन घर आवै ।
ज्ञान ध्यान की समझ न कोई, कह सुन जनम गँवावै४
जन दरिया यह बड़ा अचंभा, कहे न समझै कोई ।
भेड़ पूंछ गहि सागर लाँघै, निस्चय डूबै सोई ॥५॥

मैं तोहि कैसे बिसरूं देवा ।
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर ईसा, ते भी बंछैं सेवा ॥ टेक ॥
सेस सहज मुख निस दिन ध्यावै, आतम ब्रह्म न पावै ।
चाँद सूर तेरी आरति गावैं, हिरदय भक्ति न आवै ॥१॥
अनंत जीव जा की करत भावना,
भरमत बिकल अयाना ।
गुरु परताप अखँड लौ लागी, सो तेहि माहिं समाना २

* मूरख ।

बैकुंठ आदि सो अँग माया का, नरक अंत अँग माया।
पारब्रह्म सो तो अगम अगोचर,
कोइ बिरला अलख लखाया ॥ ३ ॥
जन दरिया यह अकथ कथा है, अकथ कहा क्या जाई।
पंछी का खोज मीन का मारग, घट घट रहा समाई ४

* * *

जीव बटाऊ रे बहता भाई मारग माईं।
आठ पहर का चालना, घड़ी इक ठहरै नाईं ॥ १ ॥
गरभ जन्म बालक भयो रे, तरुनाये गर्भान।
बृद्ध मृतक फिर गर्भ बसेरा, [तेरा] यह मारग परमान २
पाप पुन्न सुख दुख की करनी,
बेड़ी थारे लागी पाँय।
पंच ठगों के बस पड़यो रे, कब घर पहुँचै जाय ॥३॥
चौरासी बासा बस्यो रे, अपना कर कर जान।
निरुचय निरचल होयगो रे, पद पहुंचै निर्बान ॥४॥
राम बिना तो की ठौर नहीं रे, जहँ जावै तहँ काल।
जन दरिया मन उलट जगत सूं,
अपना राम सम्हाल ॥ ५ ॥

॥ राग सोरठ ॥

है कोइ संत राम अनुरागी।
जा की सुरत साहब से लागी॥ टेक ॥

अरस परस पिव के सँग राती ।
होय रही पतिब्रता ।
दुनिया भाव कछू नहिं समझै,
ज्यों समुंद समानी सलिता ॥ २ ॥
मीन जाय कर समुंद समानी
जहँ देखै जहँ पानी ।
काल कीर का जाल न पहुंचे,
निर्भय ठौर लुभानी ॥ ३ ॥
बावन चंदन भौंरा पहुंचा,
जहँ बैठे तहँ गंधा ॥
उड़ना छोड़ के थिर हो बैठा,
निस दिन करत अनंदा ॥ ४ ॥
जन दरिया इक राम भजन कर,
भरम बासना खोई ।
पारस परस भया लोह कंचन,
बहुर न लोहा होई ॥ ५ ॥

* * *

साधो राम अनूपम बानी ।
पूरा मिला तो वह पद पाया, मिट गइ खैंचा तानी ॥टेक॥
मूल चाँप दृढ़ आसन बैठा, ध्यान धनी से लाया ।
उलटा नाद कँवल के मारग, गगना माहिं समाया ॥१॥

गुरु के सब्द की कूंची सेती, अनंत कोठरी खोली ।
ध्रू लोक पर कलस बिराजै, ररंकार धुन बोली ॥२॥
जहँ बसत अगाध अगम सुख सागर, देख सुरत बौराई ।
बस्तु घनी पर बरतन ओछा, उलट अपूठी आई ॥३॥
सुरत सब्द मिल परचा हूआ, मेरु मद्ध का पाया ।
ता मैं पैस गगन में आया, वहँ जाय अलख लखाया ॥४॥
जहँ पग बिन पातर कर बिन बाजा,
बिन मुख गावैं नारी ।
बिन बादल जहँ मेंह बरसै है, ढुमक ढुमक सुख क्यारी ५
जन दरियाव प्रेम गुन गाया, वहँ मेरा अरट चलाया ।
मेरु डंड होय नाल चली है, गगन बाग जहँ पाया ६

* * *

साधो ऐसी खेती करई, जासे काल अकाल न मरई ॥टेक
रसना का हल बैल मन पवना, बिरह भोम तहँ बाई ।
राम नाम का बीजा बोया, मेरे सतगुर कला सिखाई १
ऊगा बीज भया कुछ मोटा, हिरदा में डहडाया* ।
किया निदान† भरम सब खोया,
जहँ प्रेम नीर बरखाया ॥ २ ॥
नाभी माहिं भया कुछ दीरघ, पोटा सा दरसाना ।
अर्ध कँवल में सिरा निकासा, गगन नाद गरजाना ॥३॥

---

* लहलहाया । † निराव ।

मेरु डंड होय डाँडी निकसी, ता ऊपर परकासा ।
बीज बुवा था त्रिरह भोम में, फल लागा आकासा ॥४॥
परथम जहाँ संख धुन उपजी, मन की अति रति जागी।
गाजै गगन सुधा रस बरसै, नौबत बाजन लागी ॥५॥
त्रिकुटी चढ़ा अनंत सुख पाया, मन की ऊनत* भागी ।
ऊँचे ज्ञान ध्यान सत बरतै, जहाँ सुषमना चूने लागी ६
चढ़ आकास सकल जग देखा, जुगती थी सो जानी ।
सम्पत मिली विपत सब भागी, ब्रह्म जोत दरसानी ७
जम गया दूध ब्रह्म कन निपजा, सुरत अबेरनहारी† ।
हुई रास‡ तब बरतन लागा, आनँद उपजा भारी ॥८॥
निपजा नाज भवन भर राखा, ता मध सुरत समाई ।
जन दरिया निर्भय पद परसा,
तहँ काल न पहुंचे आई ॥ ९ ॥

* * *

बाबल कैसे बिसरा जाई ।
जदी मैं पति सँग रल खेलूंगी, आपा धरम समाई ।टेक।
सतगुर मेरे किरपा कीनी, उत्तम बर परनाई§ ।
अब मेरे साँई की सरम पड़ैगी, लेगा चरन लगाई ॥२॥
थे‖ जानराय मैं बाली भोली,‖ थे निर्मल मैं मैली ।
वे बतलाएँ मैं बोल न जानूं, भेद न सकूं सहेली ॥३॥

* तेपन । † जमा करने वाली । ‡ खलयान । § ब्याह कराया । ‖ तुम ।

थे ब्रह्म भाव में आतम कन्या, समझ न जानूं ध्यानी।
दरिया कहै पति पूरा पाया, यह निस्चय कर जानी।४।

* * *

साधो मेरे सतगुर भेद बताया।
ता से राम निकट ही पाया ॥ टेक ॥

मथुरा कृस्न औतार लिया है, घुरै निसाना धाई।
ब्रम्हादिक सिव और सनकादिक,
सब मिल करत बधाई ॥ २ ॥

गगन मँडल में रास रचा है, सहस गोपि इक कंथा।
सब्द अनाहद राग छतीसों, बाजा बजै अनंता ॥३॥

अकास दिसा इक हाती उलटा, राई मान दरवाजा।
ता में होय गगन में आया, सुनै निरंतर बाजा ॥ ४ ॥

सर्प एक बासक उनिहारे, बिष तज अमृत पीवै।
कृस्न चरन में लोटै दीन होय, अमर जुगन जुग जीवै ॥५

जहँ इड़ा पिंगला राग उचारैं, चंदर सूर थकाना।
बहती नदिया थिर होय बैठी, कलजुग किया पयाना ६

राधा हरि सतभामा सुंदर, मिली कृस्न गल लागी।
अरस परस होय खेलन लागी,
जब जाय दुबिधा भागी ॥ ७ ॥

आइ प्रतीत और भया भरोसा, भीतर आतम जागी।
दरिया इकरँग राम नाम भज, सहज भया बैरागी ॥८॥

॥ राग गौरी ॥

साधो एक अचंभा दीठा ।
कड़ुवा नीम कहै सब कोई, पीवै जा को मीठा ॥टेक॥
बूंद के माहीं समुँद समाना, राई में परबत डोलै ॥
चींटी के माहीं हस्ती बैठा, घट में अवघट ओलै ॥१॥
कूंडा माहीं सूर समाना, चंद्र उलट गया राहू ।
राहु उलट कर तार समाना, भोम* में गगन समाऊ॥२॥
त्रिन के भीतर अगिन समानी, राव रंक बस बोलै ।
उलट कपाल तिल माहिं समाना, नाज तराजू तोलै॥३॥
सतगुर मिलैं तो अर्थ बतावैं, जीव ब्रह्म का मेला ।
जन दरिया वा पद कूं परसै, सो है गुर मैं चेला॥४॥

अब मेरे सतगुर करी सहाई ।
भरम भरम बहु अवधि गँवाई,
मैं आपहि में थित पाई ॥ टेक ॥
हिरनी जाय सिंघ घर रोका, डरप सिंघनी हारी ।
सोता साह होय कर निर्भय, वस्तु करै रखवारी॥२॥
अजगर उड़ा सिखर को डाँका, गरुड़ थकित होय बैठा।
भोम* उलट कर चढ़ी अकासा, गगन भोम* में पैठा।३।
सिंघ भया जाय स्याल अधीना, मच्छा चढ़ै अकासा।
कुरम जाय अंगना में सोता, देखै खलक तमासा॥४॥

---

*भूमि, ज़मीन ।

राजा रंक महल में पैठा, रानी तहाँ सिधारी ।
जन दरिया वा पद को परसै, ता जन की बलिहारी ॥५

॥ राग किदारा ॥

मुरली कौन बजावै हो, गगन मँडल के बीच ॥टेक॥
त्रिकुटी संगम होय कर, गंग जमुन के घाट ।
या मुरली के सब्द से, सहज रचा बैराट ॥ १ ॥
गंग जमुन बिच मुरली बाजै, उत्तर दिस धुन होय ।
उन मुरली की टेरहि सुनि सुनि, रहीं गोपिका मोहि २
जहँ अधर डाली हंसा बैठा, चूंगत मुक्ता हीर ।
आनँद चकवा केल करत है, मानसरोवर तीर ॥३॥
सब्द धुन मिर्दंग बाजै, बारह मास बसंत ।
अनहद ध्यान अखंड आतुर, धरत सबही संत ॥४॥
कान्ह गोपी नृत्य करते, चरन वपु* हि बिना ।
नैन बिन दरियाव देखै, अनंद रूप घना ॥ ५ ॥

॥ राग भैरौ ॥

कहा कहूं मेरे पिउ की बात ।
जो रे कहूं सोइ अंग सुहात ॥ टेक ॥
जब मैं रही थी कन्या क्वारी ।
तब मेरे करम हता सिर भारी ॥ १ ॥
जब मेरी पिउ से मनसा दौड़ी ।
सतगुर आन सगाई जोड़ी ॥ २ ॥

---

* शरीर ।

तब मैं पिउ का मंगल गाया ।
   जब मेरा स्वामी ब्याहन आया ॥ ३ ॥
हथलेवा दे बैठी संगा ।
   तब मोहिं लीनी बाँये अंगा ॥ ४ ॥
जन दरिया कहै मिटगइ दूती ।
   आपो अरप पीव सँग सूती ॥ ५ ॥

* * *

ऐसे साधू करम दहै ।
अपना राम कबहुं नहिं बिसरै,
   बुरी भली सब सीस सहै ॥ टेक ॥
हस्ती चलै भूंसै बहु कूकर,
   ता का औगुन उर न गहै ।
वा की कबहूं मन नहिं आनै,
निराकार की ओट रहै ॥ १ ॥
धन को पाय भया धनवंता,
   निरधन मिल उन बुरा कहै ।
वा की कबहुं न मन में लावै,
   अपने धन सँग जाय रहै ॥ २ ॥
पति को पाय भई पतिबरता,
   [वा की] बहु बिभचारिन हाँस करै ।
वा के संग कबहुं नहिं जावै,
   पति से मिल कर चिता जरै ॥ ३ ॥

दरिया राम भजै जो साधू ।
जगत भेख उपहाँस करै ।
ता का दोष न अंतर आनै ।
चढ़ नाम जहाज भवसागर तरै ॥ ४ ॥

॥ राग बिलावल ॥

राम भरोसा राखिये, ऊनित[*] नहिं काई[†] ।
पूरन हारा पूरसी, कलपै मत भाई ॥ टेक ॥
जल दिरवै[‡] आकास से, कहो कहँ से आवै ।
बिन जतना हो चहुं दिसा, दह[§] चाल चलावै ॥१॥
चात्रिक भूजल ना पिवै, बिन अहार न जीवै ।
हर वाही को पूरवै, अंतर गत पीवै ॥ २ ॥
राज हंस मुक्ता चुगै, कुछ गाँठ न बाँधै ।
ता को साहब देत है, अपनो व्रत साधै ॥ ३ ॥
गरभ बास में आयकर, जिब उद्धम न करही ।
जानराय जानै सबै, उनको वहिं भरही ॥ ४ ॥
तीन लोक चौदह भवन, करै सहज प्रकासा ।
जा के सिर समरथ धनी, सोचै क्या दासा ॥ ५ ॥
जब से यह बानक बना, सब समझ बनाई ।
दरिया बिकलप मेट के, भज राम सहाई ॥ ६ ॥

---

* घाटा । † कोई । ‡ टपकै । § बहाकर ।

साहब मेरे राम हैं, मैं उनकी दासी ।
जो बान्या सो बन रहा, आज्ञा अबिनासी ॥टेक॥
अरध उरध पट कँवल बिच, करतार छिपाया ।
सतगुर मिल किरपा करी, कोइ बिरले पाया ॥१॥
तीन लोक चौदह भवन, केवल भर पूरा ।
हाजिराँ से हाजिर सदा, दूराँ से दूरा ॥ २ ॥
पाप पुन्न दोउ रूप हैं, उनहीं की माया ।
साधन के बरतन सदा, भरमै भरमाया ॥ ३ ॥
जन दरिया इक राम भज, भजबे की बारा ।
जिन यह भार उठाइया, उनके सिर भारा ॥ ४ ॥

॥ राग गुंड ॥

अमृत नीका कहै सब कोई ।
पीये बिना अमर नहिं होई ॥ १ ॥
कोइ कहै अमृत बसै पताल ।
नर्क अंत नित ग्रासै काल ॥ २ ॥
कोइ कहै अमृत समुँदर माँहि ।
बड़वा अगिन क्यों सोखत ताहि ॥ ३ ॥
कोइ कहै अमृत ससि में बास ।
घटै बढ़ै क्यों होइहै नास ॥ ४ ॥
कोइ कहै अमृत सुरगाँ माहिं ।
देव पियें क्यों खिर खिर जाहिं ॥ ५ ॥
सब अमृत बातों का बात ।
अमृत है संतन के साथ ॥ ६ ॥

दरिया अमृत नाम अनंत ।
जा को पी पी अमर भये संत ॥ ७ ॥

॥ राग विहंगड़ा ॥

साधो अरट बहै घट माहीं ।
जो देखा ताही को दरसै, आदि अंत कछु नाहीं ॥टेक।
अरध उरध बिच अमृत कूवा, जल पीवै कोइ दासा।
उलटी माल गगन को चाली, सहज भरै आकासा ।१।
[जाका] चेतन बैल चलै नहिं डोलै,
अलख निरंजन माली ॥
इच्छा बिना दसों दिस पीवै, सहज होत हरियाली ॥२॥
नेपै* हुई तभी मन परचा, कन की रास† बढ़ाई ।
सुरत सुंदरी सँग नहिं छोड़ै, टारी टरै न जाई ॥३॥
अगम अर्थ कोइ बिरला जानै, जिन खोजा तिन पाया।
जन दरिया कोइ पूरा जोगी, काँसे नाद समाया ॥४॥

* * *

साधो अलख निरंजन सोई ।
गुरु परताप राम रस निर्मल, और न दूजा कोई ॥टेक॥
सकल ज्ञान पर ज्ञान दयानिधि, सकल जोत पर जोती।
जा के ध्यान सहज अघ नासै, सहज मिटै जम छोती१
जा की कथा के सरवन तेही, सरवन जागत होई ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस अरु दुर्गा, पार न पावै कोई ॥२॥

---

*पैदा । †अन्न का ढेर ।

सुमिर सुमिर जन होइ हैं राना, अति झीना से झीना ।
अजर अमर अच्छय* अविनासी, महा बीन परवीना ३
अनंत संत जा के आस पियासा, अगन मगन चिरजीवैं ।
जन दरिया दासन के दासा, महा कृपा रस पीवैं ॥४॥

* * *

संतो कहा गृहस्त कहा त्यागी ।
जेहि देखूं तेहि बाहर भीतर, घट घट माया लागी।टेक
माटी की भीत पवन का थंबा, गुन औगुन से छाय ।
पाँच तत्त आकार मिलाकर, सहजाँ गिरह बनाया १
मन भयो पिता मनसा भइ माई, दुख सुख दोनों भाई।
आसा तृस्ना बहिनें मिलकर, गृह की सौंज बनाई ।२।
मोह भयो पुरुष कुबुध भइ घरनी, पाँचो लड़का जाया ।
प्रकृति अनंत कुटुंबी मिलकर, कलहल बहुत उपाया ३
लड़कों के सँग लड़की जाई, ता का नाम अधीरी ।
बन में बैठी घर घर डोलै, स्वारथ संग खपी री ।४।
पाप पुन्न दोउ पाड़ पड़ोसी, अनंत बासना नाती ।
राग द्वेस का बंधन लागा, गिरह बना उतपाती ५
कोइ गृह माँडा† गिरह में बैठा, बैरागी बन बासा ।
जन दरिया इक राम भजन बिन, घट घट में घर बासा ६

---

*अक्षय। † बनाकर।

॥ रेखता ॥

सतगुर से सब्द ले रसना से रटन कर,

हिरदे में आन कर ध्यान लावै ।

घट कँवल बेध कर नाभि कँवल छेद कर,

काम को लोप पाताल जावै ॥ १ ॥

जहँ साँईं को सीस ले जम के सिर पाँव दे,

मेरु मध होय आकास आवै ।

अगम है बाग जहँ निगम गुल खिल रहा.

दास दरयाव दीदार पावै ॥ २ ॥

॥ छुइंसही ॥

राम नाम नहिं हिरदे धरा ।

जैसा पसुवा तैसा नरा ॥ १ ॥

पसुवा-नर उद्यम कर खावै ।

पसुवा तो जंगल चर आवै ॥ २ ॥

पसुवा आवै पसुवा जाय ।

पसुवा चरै औ पसुवा खाय ॥ ३ ॥

राम नाम ध्याया नहिं माईं ।

जनम गया पसुवा की नाईं ॥ ४ ॥

राम नाम से नाहीं प्रीत ।

यह सबही पसुवों की रीत ॥ ५ ॥

जीवत सुख दुख में दिन भरै,
सुवा पछे चौरासी परै ॥ ६ ॥
जन दरिया जिन राम न ध्याया,
पसुवा ही ज्यों जनम गवाँया ॥ ७ ॥

साधो हरि पद कठिन कहानी ।
काजी पंडित मरम न जानै,
कोइ कोइ विरला जानी ॥ टेक ॥
अलह को लहना, अगह को गहना, अजर को जरना,
विन मौत मरना ।
अधर को धरना, अलख को लखना, नैन विन देखना,
विन पानी घट भरना ।
अमिल सूं मिलना, पाँव विन चलना, विन अगिन
तन दहना, वस्तु विन पावना, तीरथ विन न्हावना ।
पंथ विन जावना, रूप न रेख वेद नहिं सिमृत,
नहिं जात वरन कुल काना ।
जन दरिया गुरगम तें पाया, निरभय पद निरबाना ॥

दरिया दरवारा, खुल गया अजर किवाड़ा ॥ टेक ॥
चमकी वीज चली ज्यों धारा, ज्यों विजली विच तारा १
खुल गया चन्द बन्द बदरी का, घोर मिटा अँधियारा २
लौ लगी जाय लगन के लारा, चाँदनी चौक निहारा ३

सूरत सैल करै नभ ऊपर, वंकनाल पट फाड़ा ॥४॥
चढ़ गइ चाँप चली ज्यों धारा, ज्यों मकड़ी मक-तारा ॥५॥
मैं मिलीजाय पाय पिउ प्यारा, ज्यों सलिता जलधारा ॥६॥
देखा रूप अरूप अलेखा, ता का वार न पारा ॥७॥
दरिया दिल दरवेस भये तब, उतरे भौजल पारा ॥८॥

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है

पुस्तक	दाम
कबीर साहिब का साखी संग्रह	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग पहला ॥।), भाग दूसरा ...	॥।)
,, ,, ,, भाग तीसरा ।≈), भाग चौथा ...	≡)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	।=)
,, ,, अखरावती	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	॥–)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र भाग प०	१≈)
,, ,, भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित	१≈)
,, ,, रत्नसागर मय जीवन-चरित्र ...	१।–)
,, ,, घट रामायन मय जीवन चरित्र, भाग १ ...	१॥)
,, ,, ,, ,, भाग २ ...	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण, और जीवन-चरित्र, भाग पहिला	१॥)
,, ,, ,, भाग दूसरा	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी" १॥) भाग २ "शब्द" ...	१।)
सुंदर विलास	१–)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	॥।)
,, भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया ...	॥।)
,, भाग ३—भजन और साखियाँ	॥।)
जगजीवन साहिब की बानी भाग पहला ॥।–) भाग दूसरा	॥–)
दूलन दास जी की बानी	।)॥
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग प० ॥।–), भाग दू० ...	॥।)
ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	१।–)
रैदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	
दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियां सागर और जीवन-चरित्र ...	
,, ,, के चुने हुए पद और साखी	
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र	
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र	
...ल साहिब (भीखा साहिब के गुरु) की बानी और जीवन-चरि	
मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ...	
तुलसीदास जी की बारहमासी	

यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र	...	...	...
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र	...	...	...
केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र	...	...	...
धरनीदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र	...	...	...
सहजो बाई का सहज-प्रकाश और जीवन-चरित्र	...	...	...
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र	...	...	...
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी] ...	...	...	...

[प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित]

संतबानी संग्रह, भाग २ [शब्द] ... ...

[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं दी है]

कुल ३३।

दूसरी पुस्तकें

लोक परलोक हितकारी सपरिशिष्ट [जिसमें ऐतिहासिक सूची म १०२ स्वदेशी औ विदेशी संतों, महात्माओं और विद्वानों और ग्रंथों के अनुमान ६५० चुने हुए वचन १६२ पृष्ठों में छपे हैं] — तसवीर सहि[त] — सजिल्द १, वेजिल्द ।।।

(परिशिष्ट) वेजड़े नगीने ... ... ।

अहिल्याबाई का जीवन चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में ... ...

नागरी सीरीज़

सिद्धि ...	...	...	...
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा	...	...	...
सावित्री गायत्री	...	...	...
[...]णा देवी (स्त्री शिक्षा का अपूर्व उपन्यास)	...	...	॥
[...]नी शशिप्रभा देवी (अनूठा उपन्यास)	...	...	१
चित्र सहित छपी है)	...	...	॥
...	...	...	... ।·

डाक महसूल [औ]र रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके [...]

। ग्राहकों से निवेदन है कि अपना पता साफ़ लिखें।

सन् १९२२ ई०] मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाब[ाद]